अंक - 14

वर्ष-2014

जागृति

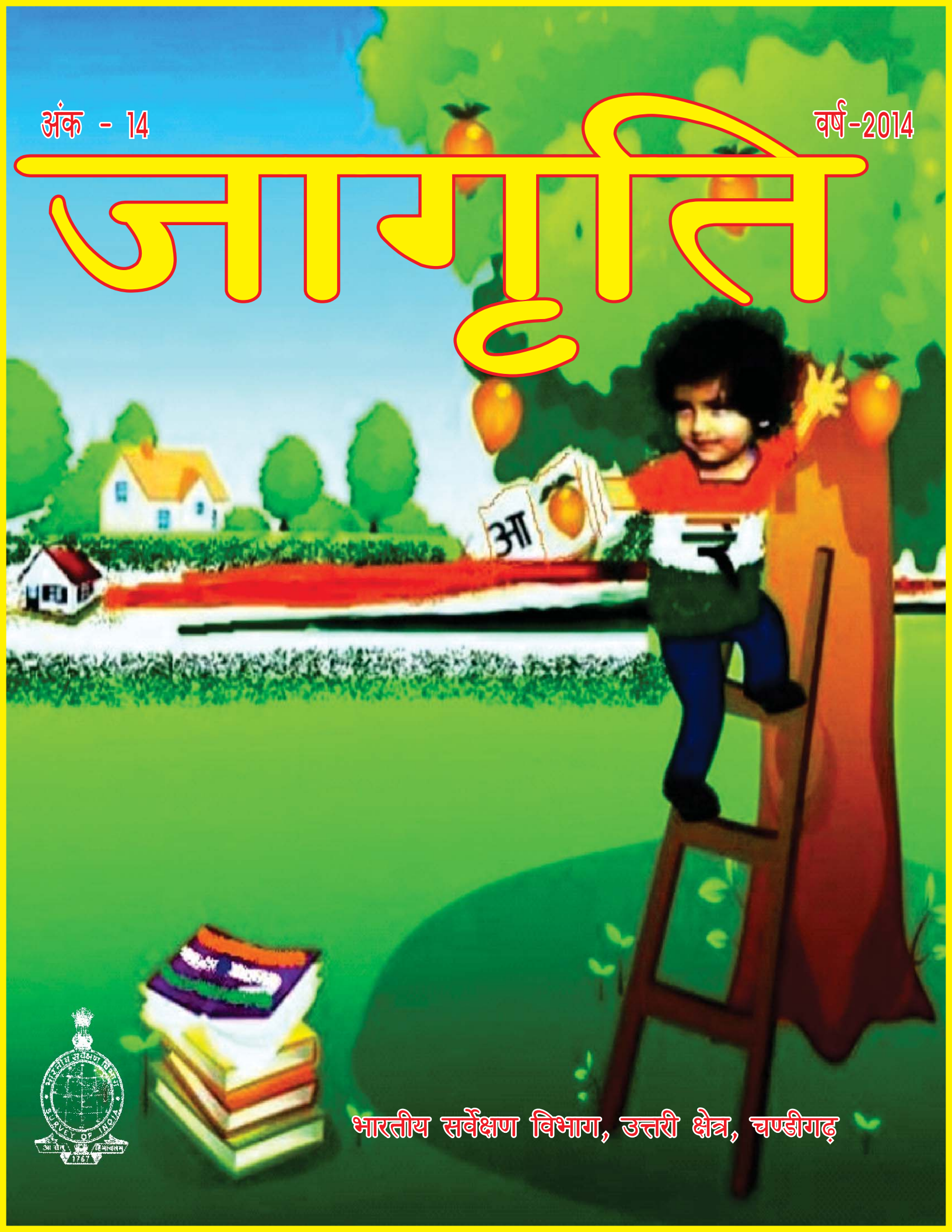

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, उत्तरी क्षेत्र, चण्डीगढ़

गृह-पत्रिका

जागृति

सम्पादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है क्योंकि रचनाओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

उत्तरी क्षेत्र, चण्डीगढ़

दूरभाष/फैक्स : 0172-2605027

ई-मेल: zone.north.soi@gov.in

संरक्षक

मेजर जनरल आर पी सांई

अपर महासर्वेक्षक

उत्तरी क्षेत्र, चण्डीगढ़

सलाहकार

श्री पंकज मिश्रा

अधीक्षक सर्वेक्षक

पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी०डी०सी०

संपादक मंडल

संपादक

श्री पंकज मिश्रा

अधीक्षक सर्वेक्षक

सह-संपादक

श्री हरिन्द्र पाल सिंह

सहायक

श्री चरनजीत सिंह

सहायक

कम्प्यूटर टंकण सहयोग

श्री जितेन्द्र सिंह

प्रवर श्रेणी लिपिक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

तार : "महासर्वेक्षक"
Telegram : "SURVEYS"
फैक्स व दूरभाष : 0091-135-2744064
Fax-cum-Telephone : 0091-135-2744064
ई-मेल : sgo@nde.vsnl.net.in
E-Mail : sgo@nde.vsnl.net.in

महासर्वेक्षक का कार्यालय
SURVEYOR GENERAL'S OFFICE
डाक बक्स सं0 37, POST BOX No.37,
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)-भारत।
DEHRA DUN-248001 (Uttarakhand), INDIA

संदेश

मुझे अत्यन्त खुशी है कि उत्तरी क्षेत्र कार्यालय एवं इसके अधीनस्थ चण्डीगढ़ स्थित कार्यालयों के अधिकारी और कर्मचारी 'जागृति' पत्रिका के प्रकाशन की निरन्तरता को बनाए रखते हुए पत्रिका का 14वां अंक जारी कर रहे हैं।

हम सभी अपने दैनिक जीवन और सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कर इसके प्रचार-प्रसार में अपना-अपना सक्रिय योगदान दें तो सुनिश्चित रूप से हम अपनी राजभाषा व अपने देश की विभिन्न कलाओं एवं विशिष्ट संस्कृति का प्रचार पूरे विश्व में कर सकते हैं। हमारे देश की पहचान विभिन्न बोलियां, भाषाएं, वेश-भूषा, खान-पान, रीति-रिवाज और त्यौहार ही तो हैं जो पूरे विश्व में आकर्षण का विषय हैं और जनसमूह को अनेकता में एकता का पाठ पढ़ाते हैं।

हमारी राजभाषा, हमारा देश खूब उन्नति करें, इन्हीं भावनाओं के साथ-साथ पत्रिका के सफल और नियमित प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

5/9/13

(डॉ0 स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक ।

भारत सरकार
Government of India

मेजर जनरल आर पी सांई
अपर महासर्वेक्षक
उत्तरी क्षेत्र

Maj Gen R P Sian
Additional Surveyor General
Northern Zone

टेलीफैक्स Telefax : 0172-2606916
ई-मेल E-mail : nwzone-soi-chd@nic.in

उत्तरी क्षेत्र कार्यालय
Northern Zone Office
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India

सर्वे कॉम्प्लेक्स, दक्षिण मार्ग, सेक्टर 32-ए,
चण्डीगढ़-160 030

Survey Complex, Dakshin Marg, Sector 32-A,
Chandigarh-160 030

संदेश

मैं बहुत खुशी और गर्व महसूस कर रहा हूँ कि उत्तरी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने प्रयासों से हिन्दी गृह-पत्रिका 'जागृति' के प्रकाशन की निरन्तरता को बनाए रखते हुए अंक-14 जारी कर रहे हैं।

मैं समझता हूँ कि हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन से लोग हिन्दी की ओर आकर्षित होंगे और उन्हें हिन्दी को जानने-समझने का अवसर मिलेगा। ऐसी पत्रिकाएं भाषा के प्रचार एवं प्रसार का एक सरल माध्यम होने के साथ-साथ किसी संस्था अथवा कार्यालय की उपलब्धियों को भी सभी के बीच उजागर करती हैं।

मेरे विचार से सरल से सरल हिन्दी से ही अधिक से अधिक लोग हिन्दी की ओर आर्किषत हो सकते हैं। अत: हमें सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा के कठिन शब्दों के स्थान पर आम बोल-चाल वाली भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि सभी हिन्दी भाषा को आसानी से समझ सकें और इसका इस्तेमाल कर सकें।

मुझे पूरा भरोसा है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार के मूल उद्देश्य में यह पत्रिका जरूर सफल होगी और इससे प्रेरित हो कर वे सभी अपने लेख अथवा रचनाएं भविष्य में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में जरूर प्रस्तुत करेंगे, जिन्होंने अभी तक हिन्दी में कोई लेख नहीं लिखा है।

इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हमारा यह प्रयास नियमित रूप से जारी रहेगा।

शुभ कामनाओं सहित।

(मेजर जनरल आर पी सांई)

सम्पादकीय

पंकज मिश्रा
अधीक्षक सर्वेक्षक
निदेशक (सामयिक आधार)
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी, चण्डीगढ़

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि उत्तरी क्षेत्र द्वारा प्रकाशित गृह-पत्रिका ''जागृति'' का 14 वां अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। सदा की भांति यह अंक भी इस क्षेत्र के अधीनस्थ सभी केन्द्रों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है जिसमें विभिन्न प्रकार के लेख, कवितायें व कहानियां सम्मिलित की गई हैं।

परमात्मा ने संसार में मानव को बोलने व लिखने की क्षमता प्रदान की है जिससे विभिन्न बोलियों व भाषाओं का विकास हुआ और अब भी जारी है। हर राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा होती है और उसके साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी आपसी संवाद कायम किये जाते हैं। भाषा एक ऐसी कड़ी है जिससे पूरी दुनिया की हलचल मिनटों/सेकेन्डों में फैल जाती है। भारतीय होने के नाते हम सभी का फर्ज है कि हम अपनी राष्ट्रीय भाषाओं के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में सहयोग दें। इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुये उत्तरी क्षेत्र के अधीनस्थ केन्द्रों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपने अपने विचारों को कलमबद्ध कर इस अंक में छापने हेतु संपादक मंडल को सौंपा।

निस्संदेह इस अंक के प्रकाशन हेतु पत्रिका के संरक्षक मेजर जनरल आर पी सांई ने मुझे व मेरे साथियों को बहुत प्रेरित किया जिससे हम समय पर इस अंक का प्रकाशन कर पा रहे हैं। मैं उनका बहुत धन्यवाद करता हूं।

हमारा यह भरसक प्रयास रहा कि गुणवत्ता की दृष्टि से यह अंक पिछले सभी अंको से बेहतर रहे और अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इसमें अपने लेख इत्यादि दें। मैं सभी रचनाकारों का धन्यवाद करते हुये उन्हें बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि यह अंक पाठकों को पसंद आये और पत्रिका का प्रकाशन सतत जारी रहे।

शुभ कामनाओं सहित।

पंकज मिश्रा।

(पंकज मिश्रा)

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ
1	मोह से मुक्ति	मुनेन्द्र कुमार त्यागी	3
2	भारत की राजभाषा - हिन्दी	एच.सी.एच. नेगी	4
3	फील्ड कार्य का एक कड़वा अनुभव	राज कुमार	5
4	बाल भिक्षावृत्ति - एक गम्भीर समस्या	श्रीमती चारू शर्मा	7
5	जैसी करनी वैसी भरनी	दीप चन्द	10
6	महिला सशक्तिकरण का स्वरूप क्या हो	राजेन्द्र कुमार	11
7	मानचित्र भवन की सुन्दरता	शिव पुजारी	13
8	हम पराये नहीं	श्रीमती अमिता डोगरा	14
9	हिन्दी के अच्छे दिन	एम0पी0 मण्डल	15
10	सीख	श्रीमती प्रेम लता नंदा	17
11	हाय रे तबादला	कुलदीप कुमार	21
12	जिन्दगी एक दरिया है	कुलदीप कुमार	22
13	हंसी के गोल गप्पे	दीप चन्द	23
14	दो शब्द मधुर बोलना आसान नहीं	लवकेश कुमार	24
15	पर्यावरण क्या चीज है	शशांक कुमार सिंह	25
16	आज की बेटी की सोच	एम0पी0 मण्डल	26
17	शेर-ओ-शायरी	हरिन्द्र पाल सिंह	32
18	सहमा-सहमा सा डरा-डरा सा	चरनजीत सिंह	33
19	श्री अमिताभ बच्चन द्वारा लिखी कुछ पंक्तियां	हरिन्द्र पाल सिंह	34
20	माँ	हरिन्द्र पाल सिंह	35
21	बहाने बनाम सफलता	हरिन्द्र पाल सिंह	36
22	जीवन का रहस्य	चरनजीत सिंह	38
23	मोह से मोक्ष	जितेन्द्र सिंह	40

मोह से मुक्ति

मुनेन्द्र कुमार त्यागी, सहायक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी., चण्डीगढ़

यह संसार मोह का ताना-बाना है। मोह पैदा होता है 'मेरा' के भाव से अर्थात यह भी मेरा, वह भी मेरा, सब मेरा है। यह भाव केवल सांसारिक ही नहीं बल्कि साधना, धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में भी स्थित होता है जैसे मेरा धर्म, मेरा मन्दिर, मेरा आश्रम, मेरी साधना इत्यादि। मोह ग्रस्त मन धर्म और अध्यात्म को भी अपने रंग में रंग लेता है।

श्री रामकृष्ण परम हंस 'काली' के भक्त थे। उनकी भक्ति इतनी प्रगाढ़ थी कि संसार तो छूट गया परन्तु 'काली' से लगाव हो गया। वे 'काली' की मूर्ति से प्रभावित होकर घंटो मस्ती में नाचते रहते और उनके मन से जब 'काली' जाने लगती तो वे रोते बिलखते हुए पुकारते थे माँ, मत जाओ और जब 'काली' के दर्शन न होते तो विरह में पुकारते और रोते बिलखते माँ, आ जाओ, आ जाओ। एक दिन उन पर प्रभु की कृपा हुई और तोतापुरी नाम के गुरू ने उन्हें 'काली' से मुक्ति दिलाई और रामकृष्ण परमहंस हो गए।

मोह जीवंत व्यक्तियों को अपना एक साधन बना लेता है और उन पर कब्जा करता है। जीवंत व्यक्ति मोह की जकड़न में एक वस्तु बन जाता है। मोह का यह जाल जीवन के हर आयाम् में दिखाई देता है। कुछ गुरू या योगाचार्य ध्यान पद्धतियों और योगासनों को एक आधुनिक रूप देकर उन पर अपना ठप्पा लगा देते हैं। अब यह विधि मेरी हो गई, ये मेरा कॉपीराईट है। कोई दूसरा उनकी अनुमति के बिना उनका उपयोग करे तो वैसा ही झगड़ा हो जाता है जैसे संसार की अन्य वस्तुओं के कारण। उनका संसार तो मोह से विषाक्त था ही उनका अध्यात्म भी विषाक्त हो जाता है। ऋषियों ने दुनिया को ध्यान-योग की बहुत सी विधियां प्रदान की परन्तु कभी कुछ मांगा नहीं यह भेंट थी मानव जाति को। इस प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में बहुत से वैज्ञानिकों ने अपनी अनुपम भेंट इस संसार को दी जिससे यह संसार समृद्ध हुआ परन्तु आज जगत में तथा अध्यात्म में बहुत से लोग शोर मचाते हैं कि यह हमारा ट्रेड मार्क है क्योंकि वहां मोह घुसा हुआ है।

संत कबीर ने कहा है कि - मेरा मुझ में कुछ नहीं। मैं ही नहीं हूँ तो मेरा कुछ कैसे होगा। मेरा 'मैं' का ही फैलाव है। 'मैं' से मुक्ति ही मोह की मुक्ति है।

भारत की राजभाषा - हिन्दी

एच.सी.एच. नेगी, अधिकारी सर्वेक्षक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी., चण्डीगढ़

भारत की राजभाषा हिन्दी है किन्तु यह सर्वथा सत्य नहीं है। जब संविधान लागू हुआ तो यह प्रावधान किया गया कि कम से कम 15 वर्षों तक हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी का भी प्रयोग होता रहेगा परन्तु तमिलनाडु में हिन्दी विरोधी आन्दोलन हिंसक हो उठा और नारा दिया गया - 'इंग्लिश एवर, हिन्दी नेवर'। यह विडंबना ही है कि तमिलनाडु में ऐसा उग्र आन्दोलन हुआ, जबकि चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भी बाद में हिन्दी के विरोध में बोलने लगे, यहां तक कि स्वतन्त्र पार्टी के नेता के रूप में पटना में एक जनसभा को संबोधित करते हुए भी वह हिन्दी के खिलाफ आग उगलने लगे। जब लोगों ने उन्हें याद दिलाया कि उनके हस्ताक्षर से हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है तो उन्होंने सफाई दी कि जब नेहरू ही मद्रास में जाकर आश्वासन दे आए कि हिन्दी दक्षिण भारत पर थोपी नहीं जाएगी तो वह किस मुंह से हिन्दी का समर्थन करेंगे।

सन् 1936 में जब महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की तो हिन्दी का पहला विद्यालय दक्षिण भारत में रामास्वामी नायकर पेरियार के घर खोला गया। जो भी हो, अंग्रेजी का इस्तेमाल बनाए रखने के लिए अनुच्छेद 343 में संशोधन किया गया। इसी कारण राजभाषा अधिनियम 1963 में संशोधन कर अंग्रेजी का इस्तेमाल जारी रखने का प्रावधान किया गया।

सवाल यह कि क्या अंग्रेजी का ज्ञान इतना आवश्यक है और क्या भारतीय भाषाओं की कोई जरूरत नहीं है? अंग्रेज शासन करने के लिए आए थे, फिर भी उन्होंने यहां की भाषाएं सीखीं। भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी जॉर्ज अब्राहम गियर्सन ने भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण किया जो कि लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के नाम से प्रकाशित है। यह अब तक का एक मात्र भाषाई सर्वेक्षण है, जो 30 वर्षों के कठिन परिश्रम का परिणाम है। 8000 पृष्ठों की रिपोर्ट 10 खण्डों में प्रकाशित हुई। जिसका आजतक पुनर्मुद्रण भी नहीं कराया गया।

अंग्रेजों की सोच साफ थी कि जहां शासन करना है वहां की भाषा को जानना अनिवार्य है, क्योंकि भाषा के साथ पूरी संस्कृति, रीति-रिवाज जुड़े होते हैं। परन्तु अंग्रेजी राज खत्म होने के बाद भी अंग्रेजी न सिर्फ बनी रही, बल्कि उसकी महत्ता लगातार बढ़ती रही। प्रारम्भ में तो सिविल सेवा की परीक्षा का माध्यम सिर्फ अंग्रेजी थी। 1970 के दशक में पहली बार इसमें परिवर्तन किया गया जब ए०आर० किदवई, संघ लोग सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे। उन्होंने पाया कि एक छात्र जो लिखित परीक्षा में प्रथम आया था, वह साक्षात्कार में जबाव देने में लड़खड़ा रहा था, क्योंकि वह अंग्रेजी में अपनी बात नहीं रख पा रहा था। जब उससे पूछा गया कि यदि उससे प्रश्न अंग्रेजी में पूछे जाएं तो क्या वह हिन्दी में जबाव दे सकता है तो वह तैयार हो गया और उसने बहुत अच्छा जबाव दिया। प्रशासन का अर्थ होता है जनता की सेवा करना और उसका दुःख-दर्द दूर करना, अधिकारी यदि आम जनता की भाषा तक नहीं जानेंगे तो सेवा क्या करेंगे?

अतः हिन्दी भाषा या अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है उससे हिन्दी का विकास होगा और शीघ्र ही राजभाषा हिन्दी सर्वजन की भाषा बन पाएगी। यह हमारा उद्देश्य है।

फील्ड कार्य का एक कड़वा अनुभव

राज कुमार, खलासी
जम्मू एवं कमीर जी०डी०सी०, नगरोटा, जम्मू

दिनांक 10-09-2012 को निदेशक, जम्मू व कश्मीर जी०डी०सी० द्वारा सर्वश्री दीपक बलोत्रा तथा शुभ कर्ण, सर्वेक्षक के साथ 6 ग्रुप 'सी' (पूर्वकालीन ग्रुप 'डी'), जिनमें मैं भी शामिल था, के एक दल को एन०यू०आई०एस० से संबंधित फील्ड कार्य करने के लिए बारामुला के लिए रवाना होने का आदेश दिया गया था। उस समय कश्मीर घाटी की स्थिति काफी खराब थी जिसे ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा हम सभी का बीमा भी करवाया गया था। आदेशानुसार हम प्रातः 0600 बजे किराये पर उपलब्ध करवाई गई प्राइवेट गाड़ियों द्वारा बारामुला के लिए रवाना हुए तथा रात को रामबन में रात्रि विश्राम करने के बाद हम दिनांक 11-09-2012 को 1630 बजे बारामुला पहुंचे और ठहरने के लिए एक होटल लिया। अगले दिन अर्थात 12-09-2012 को हमें प्रातः ही फील्ड कार्य के लिए रवाना होना था लेकिन 0800 बजे से पहले ही पथराव होने के कारण हालात खराब हो गये तथा सुरक्षा कारणों से हम फील्ड में नहीं जा सके।

दोपहर बाद हालात में कुछ सुधार होने के बाद हम फील्ड क्षेत्र की रेकी करने के लिए उड़ी गये जोकि बारामुला से लगभग 55 किलोमीटर दूर है तथा रेकी करने के बाद शाम को होटल वापस आ गये। दिनांक 13-09-2012 के बाद जब भी स्थिति सामान्य होती तो हम फील्ड कार्य के लिए निकलते लेकिन यही डर रहता था कि पता नहीं कब स्थिति खराब हो जाय? पत्थरबाजी तो लगभग प्रतिदिन होती थी। इसी बीच दिनांक 21-09-2012 से 24-09-2012 तक स्थिति इतनी खराब हो गई कि कर्फ्यू लगा दिया गया तथा पूरी तरह से बंद की स्थिति हो गई जिसके कारण चार दिन तक केवल ब्रैड खाकर गुजारा करना पड़ा क्योंकि होटल वाले लगभग प्रतिदिन सामान खरीद कर खाना बनाते थे। यहां तक कि नमकीन चावल खिलाने के लिए भी होटल मालिक ने हाथ खड़े कर दिए।

दिनांक 09-10-2012 को मैं एवं अन्य साथी श्री दीपक बलोत्रा, सर्वेक्षक के साथ फील्ड कार्य के लिए खानपुर नामक गांव में गये जोकि बारामुला से लगभग 6 किलोमीटर दूर है। श्री बलोत्रा ने मुझे एवं श्री लबी राम, खलासी को जी०पी०एस० मशीन के पास रहने का आदेश दिया। अभी थोड़ी देर ही हुई थी कि लगभग 13-14 वर्ष का एक बच्चा हमारे पास आया और पूछने लगा कि यहां पर क्या काम कर रहे हो? मैंने उसे उत्तर दिया कि हम एक प्राइवेट कंपनी के कर्मचारी हैं तथा मजदूरी पर कार्य करते हैं क्योंकि

होटल वाले ने हमें सचेत कर दिया था कि किसी को भी भारत सरकार का कर्मचारी बताने पर खतरा हो सकता है। इतना सुनते ही वह बच्चा जी०पी०एस० मशीन के चारों ओर घूमने लगा। मैंने उसे कहा कि आपके ऐसा करने से मशीन हिल सकती है और डाटा खराब हो सकता है। इतना सुनते ही वह गाली देकर बोला कि तुम्हें अभी बताता हूं। तुम्हारे पीछे बम लगा कर चीथड़े उड़ा दूंगा।

इसके बाद वह कुछ दूरी पर एक दीवार के पास गया और बाहर से ही कुछ कहने लगा। बाद में पता चला कि उस दीवार में कुछ सुराख बने हुए थे और उन सुराखों के माध्यम से ही उस बच्चे ने दीवार के उस पार बैठी महिलाओं को कश्मीरी भाषा में कुछ कहा था। कुछ ही देर बाद लगभग 12-13 महिलाएं हमें अपनी ओर आती हुई दिखाई दी तथा पास आते ही उन्होंने कश्मीरी भाषा में बोलना शुरू कर दिया। हमें केवल 'उठाओ', 'उठाओ' ही समझ में आया। हमने उन्हें समझाया कि हम प्राइवेट कंपनी के कर्मचारी हैं तथा जम्मू व कश्मीर सरकार द्वारा बारामुला के विकास के लिए करवाए जाने वाले कुछ विकास कार्यों के लिए आंकड़े इकटठे कर रहे हैं । इसपर महिलाओं ने कहा कि तुम झूठ बोल रहे हो, तुम भारत के लोग हो। इसके बाद महिलाएं चली गई लेकिन लगभग 14-15 लोग आ गये। इन्हें भी हमने यही बताया कि हम जम्मू व कश्मीर सरकार के लिए कुछ कार्य कर रहे हैं जिससे संतुष्ट हो कर वे भी चले गये।

इतने में सबसे पहले आए हुए बच्चे ने कुछ दूरी पर बह रहे नाले के पास जाकर एक सीटी बजाई और एक सीटी नाले के पार जाकर बजाई। होटल मालिक ने हमें बता दिया था कि यदि कोई सीटी बजाए और सीटी बजने के बाद कुछ लोग अपनी ओर आते हुए दिखाई दें तो समझ लेना कि खतरा है। सीटी बजने के कुछ ही देर बाद लगभग 17-18 युवक, जोकि 15-19 आयुवर्ग के थे, हमें अपनी ओर आते हुए दिखाई दिए जिन्हें कुछ दूरी पर उपस्थित श्री दीपक बलोत्रा, सर्वेक्षक ने भी देख लिया था। खतरे को भांपते हुए वे तुरन्त गाड़ी लेकर हमारे पास आए और हमने जल्दी-जल्दी चालू मशीन को उठा कर गाड़ी में रखा तथा गाड़ी में बैठ कर वहां से निकले। मशीन को भी गाड़ी चलते-चलते ही बंद किया गया। गनीमत यह रही कि मशीन में लिया गया डाटा सुरक्षित रहा।

जब हमने इस घटना के बारे में होटल मालिक को बताया तो उसने कहा कि आप सबकी खुशकिस्मती रही कि आप सही सलामत वहां से निकल आए वरना जानमाल का भारी नुकसान पक्का था। हमने भी उसका धन्यवाद किया क्योंकि उसी की सलाह पर चलने के कारण हम अपनी रक्षा कर सके।

पूरी वस्तुस्थिति से निदेशक, जम्मू व कश्मीर जी०डी०सी० को अवगत करवाया गया तो उन्होंने अनुमति दी कि ऐसे हालात में फील्ड कार्य संभव न होने के कारण मुख्यालय वापस आ सकते हैं।

बाल भिक्षावृत्ति - एक गम्भीर समस्या

चारू शर्मा, सर्वेक्षक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी., चण्डीगढ़

'बचपन' एक ऐसा शब्द, जिसे सुनते ही हर किसी की आंखे एक दीपक की भांति जगमगाने लगती हैं और उन्हीं दिनों को फिर से पा लेने की लालसा होने लगती है।

एक सुप्रसिद्ध कवि द्वारा कही गई ये पंक्तियां सबका मन उल्लास से भर देती हैं:-

बचपन तो होता है निराला, निश्छल, निर्मल, मस्ती वाला।
दुनियां से उसको क्या मतलब, वो तो खुद ही भोला-भाला।

परन्तु बचपन का कोई दूसरा रूप भी है जिससे शायद हम सब अछूते हैं। भारत के संविधान का हम सभी सम्मान करते हैं। संविधान में सभी लोगों को बराबर का दर्जा दिया है चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, लिंग आदि का हो। किसी में भी भेदभाव करना कानूनन अपराध माना गया है। इसलिए आज जाति प्रथा को समाप्त करने और महिलाओं को पुरूषों के बराबर दर्जा देने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन हमारे समाज का एक हिस्सा ऐसा भी है जो तेज़ी से विकास करते इस देश में बहुत पीछे छूट गया है जिन्हें हम भिखारी कहते हैं।

'भिक्षावृत्ति एक अभिशाप' - यह वे पंक्तियां है जो हमें कभी विज्ञापनों में तो कभी पोस्टरों में अक्सर दिखाई दे जाती हैं जिन्हें पढ़कर हम भिखारियों को घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। परन्तु क्या हमने कभी सोचा है कि हमारी इस घृणा का असली हकदार कौन है - वह जो अपनी भूख मिटाने के लिए लोगों के सामने हाथ फैलाते हैं, हर मौसम चाहे वो धूप हो, सर्दी हो या बारिश का सामना करते हुए इस गगन को ही अपनी छत समझकर रहते हैं, कूड़े के ढेर में खाने का सामान ढूंढ़ते हुए पाए जाते हैं या फिर वो लोग जो इनकी इस हालत के लिए जिम्मेदार हैं।

जिस जगह के पास से गुजरते समय हम अपनी नाक पर रूमाल रख लेते हैं वहां यह लोग अपनी पूरी जिंदगी बिता देते हैं। परन्तु जब किसी को दोषी ठहराने की बात आती है तो हम इन्हें ही साफ-सुथरे

शहर की गंदगी समझ लेते हैं। इनके जीवन को सुधारने के स्थान पर हम इनके जीवन को ही कोसने लगते हैं।

भारत में आदिकाल से ही दान करने की परम्परा चली आ रही है। दान मांगने पर कई दानवीर जैसे कर्ण, राजा हरिश्चन्द्र, बाली आदि ने अपने प्राण तक दान दे दिए। इन लोगों का नाम आज भी हमारे देश में आदर व सत्कार के साथ लिया जाता है। परन्तु आज के समय में यह धीरे-धीरे एक व्यवसाय का रूप अख्तियार करती जा रही है। कहीं-कहीं तो लंगड़ा व अंधा बनकर बच्चों के सहारे गीत गाते हुए भिखारी पूरी ट्रेन का सफर करते हुए मिल जाते हैं। ऐसे में उनके साथ छोटा बच्चा केवल चार या पांच साल का होता है। इस तरह वह अपने साथ-साथ उस छोटे बच्चे को भी भिक्षावृत्ति की तरफ धकेल रहा है। यदि बचपन में ही किसी बच्चे को ऐसी परिस्थितियों में पाला जाए तो आगे जाकर क्या करेगा इसका अनुमान आप लगा सकते हैं।

बच्चों को भिक्षावृत्ति में धकेलने से उनका शारीरिक एवं भावात्मक शोषण तो हो ही रहा है साथ ही इनके मासूम चेहरों का भोलापन, उनकी मुस्कान, उनके सपनों को भी छीन रहा है। एक सुप्रसिद्ध कवि ने ठीक ही कहा है:-

कहां है वो बचपन, जो छूटे तो पछताए,
क्यों है वो परेशां, ये बचपन छटपटाये।
खिलने से पहले ही मुरझाता ये बचपन,
ये शोषित, ये कुंठित, ये अभिशप्त बचपन।।

कविता की ये पंक्तियां किसी का भी मन झंझोर सकती हैं।

सरकार की नज़र में भिक्षावृत्ति एक अपराध है और भीख मांगने वाले लोग एक अपराधी। लेकिन हैरत की बात है कि इन अपराधियों के लिए तो जेलों में भी कोई जगह नहीं होती। भिक्षावृत्ति बच्चों को कातिल बना रही हैं तो कुछ बच्चे अपराध का रास्ता पकड़ने को मज़बूर हो रहे हैं। विभिन्न बाजारों, मुहल्लों व धार्मिक स्थानों पर भिक्षा मांगते महिलाओं व बच्चों के झुण्ड नज़र आ जाते हैं। दीन-दुखियों, अपाहिजों व अनाथों को दान देने की परम्परा पुण्य लाभ से जोड़ी गई है परन्तु यही परम्परा समाज में कुष्ठ रोग की भांति फैलती जा रही है।

भिक्षावृत्ति इन बच्चों के मन तथा दैनिक जीवन में एक क्रीडा की भांति समा गई है। हम बड़े-बड़े नोट बिना किसी हिचक के इन बच्चों को बांट कर इन्हें भीख मांगने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। किसी स्वस्थ बच्चे व किशोर को भीख देकर हम उनके भविष्य व सामायिक विकास में बाधक बन रहे हैं।

बच्चों को भिक्षावृत्ति के इस अपराध से दूर ले जाना हमारा सामाजिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि इस पूरी मानव-जाति को बचाने के लिए भी जरूरी है। इसके लिए सरकार को कुछ ठोस नीतियां बनानी चाहिए। परन्तु हमारे योगदान के बिना यह सभी प्रयास विफल हो सकते हैं -

- इन बच्चें को पैसा न देकर, दैनिक इस्तेमाल की चीज़ें जैसे खाना, कपड़ा आदि दें।
- हमें इन बच्चों के साथ प्रेम व आदर से बात करनी चाहिए और उनके साथ एक इंसान की तरह ही व्यवहार करना चाहिए ताकि व स्वयं को भी समाज का एक सम्मान जनक हिस्सा समझें।
- बच्चों के हित में कार्य करने वाली संस्थाओं को व्यवस्थित व सुदृढ़ करना चाहिए।
- पुलिस की मदद से उन सभी बच्चों की खोज करके, उनके माता-पिता को बच्चे के अच्छे भविष्य बनाने में सहयोग करने के लिए व उन्हें भी इन संस्थाओं से जुड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

पर विडंबना यह है कि अधिकारी व कानून के रखवाले इस तरफ ध्यान नहीं देते। यह एजेंडा उनकी प्राथमिकता सूची में नहीं है।

यदि आज भी हमने बाल भिक्षावृत्ति रोकने के लिए पूरा ज़ोर नहीं लगाया तो शायद आने वाले कल में हमें इन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान और भोलेपन की जगह एक भयंकर विद्रोहपूर्ण भाव देखना पड़ेगा जो धीरे-धीरे हमारे इस समाज को घुन की तरह अन्दर से खोखला करके इसे पूर्णत: छिन्न-भिन्न कर देगा।

दो वीरों में महान वह है जो अपने शत्रु का भी आदर करता है।

ब्यूमेल

जैसी करनी वैसी भरनी

दीप चन्द, अधिकारी सर्वेक्षक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी०डी०सी०, चण्डीगढ़

मनुष्य तू ईमानदारी से अपना कार्य कर। सच्चाई व लगन से अपने कार्य में आगे बढ़ तुझे इसी से सुख मिलेगा। किसी का बुरा मत सोच। भगवान पर भरोसा रख वह तुझे सही मार्ग दिखाएगा, तेरी जिन्दगी को संवारेगा। मेहनत से नि:स्वार्थ भाव से कार्य ही भगवान की पूजा कहलाता है। जब मनुष्य जन्म लेता है तो वह न तो कुछ अपने साथ लाता है तथा मरणोपरान्त न ही अपने साथ कुछ ले जाता है। वह तो खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है। वह तो सिर्फ अपनी अच्छाई बुराई छोड़ जाता है।

आज का मनुष्य इन बातों को महत्व नहीं देता है। वह तो अपनी चालाकी, बेईमानी से बाज नहीं आता। कुछ मनुष्य तो सोचते है कि जो कार्य करता हूं उसे तो भगवान भी नहीं जानता तो मनुष्य क्या जानेगा। लेकिन नहीं, ऐसा सोचना सर्वथा गलत है। भगवान आपकी सारी गतिविधियों को देख रहा है। जैसा-जैसा करोगे उनका वैसा ही फल आपको भगवान बराबर देगा।

उदाहरण के लिए एक साधू था जो व्रत रखता था। जब व्रत रखता था तो पानी तक नहीं पीता था तो सब मनुष्य उसकी बहुत बढ़ाई करते थे कि यह साधू तो भगवान के लिए निर्जल व्रत रखता है। परन्तु एक दिन वह गंगा में डुबकी लगाने अर्थात स्नान करने गंगा तट पर पहुंचा तो वहां गंगा तट पर काफी भीड़ थी। उसी भीड़ के सामने उस साधू ने गंगा में डुबकी लगा दी तो जब वह बाहर आया तो सबने देखा कि साधू के मुख में एक मछली फंसी हुई है और साधू तड़फड़ा रहा था तथा इशारा कर रहा था कि कोई इस मछली को निकाले। वहां एकत्र लोगों ने उस साधू के मुंह से मछली खींचकर निकाल दी। उसके बाद सभी लोगों ने उस साधू से पूछा कि आपके मुंह में यह मछली कैसे फंस गई तो साधू ने बताया कि मैं आप सभी से झूठ बोलता था कि मैं व्रत में पानी भी नहीं पीता बल्कि मैं पानी में डुबकी लगाते समय पानी के अन्दर मुंह खोलकर पानी पी लेता था। आज भी मैंने पीने के लिए जैसे ही मुंह खोला तो यह मछली मेरे मुंह में फंस गई। आप लोगों से मैं गलती की क्षमा मांगता हूं। इस प्रकार उस साधू की चालाकी व बेइमानी पकड़ी गई। ठीक ही कहा गया है कि - जैसी करनी वैसी भरनी।

महिला सशक्तिकरण का स्वरूप क्या हो

राजेन्द्र कुमार, सर्वेक्षक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी, चण्डीगढ़

आजकल साहित्य क्षेत्र में एक नया शब्द 'महिला सशक्तिकरण' बड़ी धूम मचा रहा है। बड़ा शोर सुन रहे हैं 'मुक्त करो नारी को मानव, चिर बंदनी नारी को', नारी को ताकतवर बनाओ, उसे पुरूष के बराबर लाओ। पर भद्र पुरूषों, मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या 'महिला आरक्षण बिल' पास होने से महिला सशक्त हो जाएगी? दिल्ली में 'निर्भया' के रेप और उसके मर्ड़र के बाद जितने संसद ने सख्त कानून बनाए, क्या उससे नारी सशक्तिकरण हुआ? सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीशों पर महिला यौन-शोषण के आरोप लगने के बाद भारतीय नारी ताकतवर होकर मर्द बन पाई? तरूण तेजपाल को सलाखों के पीछे कर क्या महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को भारतीय नारी ने पा लिया?

कठोर से कठोर कानून बना लें तो क्या नारी यौन-शोषण की इतिश्री हो पाएगी? नहीं। हाँ, पुरूष भयाक्रांत अवश्य हो जाएगा। नारी से बात करते वक्त पुरूष पीठ कर लेगा। सुनो, भद्र पुरूषों नारी काया ही ऐसी है कि समय, स्थान मिला नहीं कि पुरूष मन उद्वेलित हुआ नहीं।

न तो राम-रावण युद्ध और न ही महाभारत के युद्ध में 18 अक्षौहणी सेना का संहार नारी विषय से अछूता है। ग्रीक और रोमन साहित्य नारी सौंदर्य पर आधारित है। हीर-रांझा, सस्सी-पुन्नु, सोहनी-महिवाल, रोमियो-जूलियट के किस्से बेकार के अफसाने नहीं। मोहम्मद-बिन-कासिम की क्रूरता नारी पर ही टूटी थी। राजे-महाराजे नारी को छीन कर अपना रूतबा बढ़ाते थे। आज भी पुरूष यदि विवाह के लिए आता है तो अपने राजसी ठाठ में आता है। दूल्हा हाथ में तलवार, सिर पर मुकुट, मुकुट में कलगी, सजे रथ पर सवार हो नारी को ब्याहने आता है। यह राजसी चिन्ह यद्यपि आज प्रतीक स्वरूप है तो भी इन चिन्हों के पीछे नारी को हर ले जाने की प्रवृति है। चाहे आज यह स्त्री-हरण शांत ढंग से प्रचलित है, पर भावना इसके पीछे पुरूष की नारी पर मर मिटने की है। पुरूष की प्रत्येक कार्यविधि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से नारी पर सर्वस्व न्यौछावर करने की है।

समाज में 2 ही तरह की भूख होती है - पहली भूख पेट की, दूसरी कामेन्द्रियों की। दोनों भूखे पूरी होती रहें तो समाज बूढ़ा न हो। संस्कृत भाषा में इन दोनों भूखों को बड़े शालीन शब्द 'शिशनोदर' से संवारा हैं। सारा समाज इन दोनों भूखों की पूर्ति में लाखों पाप करता है। व्यावसायिक और सामाजिक

ताना-बाना इन्हीं दो भूखों की पूर्ति के लिए दिन-रात लगा है। पुरूष नारी से अलग नहीं, नारी पुरूष से विमुख नहीं। दोनों सशक्त स्तम्भ हैं समाज के। दोनों का सशक्तिकरण सारे समाज को सशक्त बनाएगी, यह स्वाभविक है। माँ से पत्नी तक और पत्नी से बहन तक के सारे संबंध नारी से बंधे हैं। पुरूष इन संबंध ो को छोड़ एक क्षण भी जी नहीं सकता। पुरूष का अस्तित्व ही नारी बिना नहीं।

नारी भारतीय वांडमय में पूज्या, आराध्या देवी, ज्वाला जी, चामुंडा देवी, नैना देवी, चिंतापूर्णी या मनसा देवी हमारे लिए पागलपन की हद तक पूजनीय हैं। हाँ, कोई भैरोनाथ हुए तो सजा मिली। अब देखिए दिल्ली में 'निर्भया' का रेप और मर्ड़र हुआ तो सबको सजा मिलेगी? जो भी नारी का अपमान करेगा दंडित होगा। पुरूष यदि पुरूष का भी अपमान करेगा तो दंडित होगा। हाय-तौबा मत मचाओ कि नारी को मार दिया। नारी को तो पुरूष ने छोड़ा ही कुछ नहीं। पुरूष जालिम है, राक्षस है, मार डालो पुरूष को। क्यों, समाज चलेगा कैसे?

यह सब राजनीतिक शब्दावली है कि नारी का सशक्तिकरण करो। महिला आरक्षण बिल पास करो। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कठोर कानून बनाओ। होड़ लग गई राजनीतिक दलों में महिलाओं के सशक्तिकरण की। क्या नारी से पुरूष का गला कटवाना चाहते हैं? मल्लयुद्ध करना है समाज को? नाक कटवानी है पुरूष की? नारी को मर्द बनाना चाहते हो? पुरूष को घर बिठाना चाहते हो क्या? चलो, कोई बात नहीं ये राजनेता नारी को मर्द बना ही देते हैं तो क्या ये राजनेता नारी सुलभ गुणो को नारी से परे हटा सकेंगे? नहीं। तो फिर समझ लो नारी को स्वतः आगे बढ़ने दो। उसे स्वाभाविक आगे आने दो।

राजनेता महिला सशक्तिकरण की दुहाई न दें। क्या महिला सशक्तिकरण की दुहाई देने वालों ने इंदिरा गांधी को सशक्त और कर्मठ प्रधानमंत्री बनाया था? क्या प्रतिभा देवी सिंह पाटिल सशक्तिकरण के नारों से राष्ट्रपति बनीं? कल्पना चावला, सुनिता विलियम आसमान पर खोज करने नारे लगाने वालों के बल पर वहां पहुंची? राजदूत से चांसलर तक, डॉक्टर से इंजीनियर तक, अध्यापक से अधिवक्ता तक का सफर नारी ने निज बल से किया है और सुनों दुनियां में जितने भी सफलतम पुरूष हुए, उनके पीछे नारियों का ही तो हाथ था। मंत्री से प्रधानमंत्री, अन्वेषक से संचालक तक सब कहीं नारी स्वयं जुटी है। महिला सशक्तिकरण के नारे लगाने वाले स्त्री-पुरूष की सहृदयता, संवेदनशीलता को परीक्षा में न डालें। घृणा के बीज न बोएं। नारी सम्मान में बाधा न डालें।

नारी सशक्तिकरण होगा नारी को शिक्षित करने से। किसी पुरूष ने नारी को शिक्षित होने से नहीं रोका। नारी सशक्तिकरण होगा नारी को प्रेम और न्याय का अधिकार देने से। नारी सशक्त होगी रूढ़ियों और अंधविश्वासों को तोड़ने से। नारी स्वयं इन रूढ़ियों को तोड़ने में सक्षम हो। पुरूष ने उसे कहां रोका है? अपने विचार खुलकर समाज के सामने रखे नारी।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में नारी को पुरूष ने कहां रोका है? किरण बेदी, सुषमा स्वराज, ममता बेनर्जी, जयललिता, मायावती पुरूषों से कहां कम हैं? है न ये सब मर्दो से बढ़ कर।

ऐसी नारियों को महिला सशक्तिकरण से क्या लेना-देना? हाँ, अगर महिला सशक्तिकरण के नारे लगवाने वाले पुरूषों की नाक नारियों से कटवाना चाहते हैं तो वे अपना रांझा राजी कर लें। नारी सशक्तिकरण करने वाले यदि पुरूष संहार करवाना चाहते हैं तो आखिरी दाव वे भी चल लें, पर पुरूष-नारी के अनादिकालसे चले आ रहे मधुर और प्राकृतिक संबंधों को ये नारी मुहिमदाता कम न कर सकेंगे।

पर इनसे इतना जरूर कहूंगा - सड़क पर पत्थर तोड़ती महिला, सिर पर ढेरों मण मल ढो रही महिला, झुग्गी-झोंपड़ी में भूखी सो रही महिला, खापों के निर्णयों से मारी जा रही महिला के सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करो, उन्हें न्याय दिलाओ, उनकी भूख मिटाओ। यह सच्चा महिला सशक्तिकरण होगा।

मानचित्र भवन की सुन्दरता

शिव पुजारी, खलासी
पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ

ईस्ट यू०पी० जी०डी०सी० की न्यू बिल्डिंग निराली है।
गोमती नगर के विभूति खण्ड में, उत्तम शोभा वाली है।।

वियर हाउसिंग के ही बगल में, नव निर्मित बिल्डिंग न्यारी है।
बेसमेंट के ऊपर जीरो से, तीन तल्ले की छवि न्यारी है।।

साथ में दोनों ओर सीढ़ियां, जो लगती बलिहारी हैं।
लिफ्ट भी उसमें लगी हुई है, जो अपने में न्यारी है।।

भूतल पर है सभाहाल, सब 'हाल' उसे भी कहते हैं।
बाद सभा के चौपहिया गाड़ियां खड़ी भी करते है।

हम पराये नहीं

अमिता डोगरा, खलासी
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

यों ना देखों हमें, हम पराये नहीं
आ गए हैं मगर, बिन बुलाए नहीं

मन तो दर्पण हमारा, मुझको देख ले
हमने चेहरे पर चेहरे लगाऐ नहीं

रंग रिश्तों में कच्चे तुम्हीं ने भरे
फूल कागज के हमने खिलाए नहीं

नींद अपनी लुटाते रहे रात में
हमने सपने किसी के चुराए नहीं

दर्द चुनते रहे हर कली का यहां
हमने गलियों में काटें बिछाऐ नहीं

दोस्तों का उजाला ही इतना रहा
दीप आंगन में हमने जलाऐ नहीं

हम तो पतझड़ के आँसू रहे पोंछते
गीत हमने बहारों के गाऐ नहीं

बिक ना पाऐ समय के इशारों पे हम
इसीलिऐ इस जमाने को भाऐ नहीं

हिन्दी के अच्छे दिन

एम०पी० मण्डल, अवर श्रेणी लिपिक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी०डी०सी०, चण्डीगढ़

लोकसभा चुनाव के पूर्व भाजपा का एक 'नारा' जिसे मीडिया के माध्यम से गांव-गांव, शहर-शहर, आम जनता के बीच काफी लोकप्रिय बनाया गया, वो है- अच्छे दिन आने वाले हैं।"

चुनाव परिणाम आने के पश्चात् भाजपा पूर्ण बहुमत से विजयी हो गई और श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री बन गए, तो क्या वाकई में अच्छे दिन आ गए? शायद अभी निर्णय लेना उचित नहीं होगा। लेकिन जब प्रधानमंत्री श्री मोदी जी दिल्ली में अपने शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित दक्षेस देशों के राष्ट्राध्यक्षों से द्विपक्षीय वार्ता हिन्दी भाषा में की तो ऐसा प्रतीत हुआ कि हिन्दी भाषा के मामले में जरूर अच्छे दिन आ गए।

ऐसा नहीं कि प्रधानमंत्री जी को अंग्रेजी भाषा नहीं आती, वे चाहते तो अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर सकते थे, लेकिन जब भी दो राष्ट्रों के नेता मिलते हैं तो वे दोनों अपनी-अपनी भाषा में बोलते हैं और दोनों पक्षों के अनुवादक उस वार्तालाप को तत्काल अनुवाद करते चलते हैं। सवाल यह उठता है कि जब सारी बातें अनुवादक के सहारे ही होती है तो फिर हमारे देश के प्रतिनिधि अपनी राजभाषा हिन्दी में ही वार्ता क्यों नहीं करते चीन के राष्ट्रपति माओ जे तुंग अंग्रेजी भाषा बहुत अच्छी तरह जानते थे, किन्तु उनसे मिलने जब किसी अंग्रेजी भाषी देश के राष्ट्राध्यक्ष आते थे तो वे अंग्रेजी समझते हुए भी उसका उत्तर अंग्रेजी में न देकर चीनी भाषा में देते थे, अनुवादक उसका अनुवाद कर देता था। किसी देश की भाषा केवल संवाद का काम नहीं करती अपितु विदेशी संबंधों में स्वाभिमान का प्रतीक भी होती है। विदेशी संबंधों में इन प्रतीकों का कैसे प्रयोग करना है, यह भी विदेश नीति के संचालकों की सफलता का एक बड़ा कारक माना जाता है। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि अभी तक हमारे देश के विदेश मंत्रालय में अंग्रेजी भाषा का ही बोल-बाला चल रहा है। इसलिए जब दूसरे देशों के प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्राध्यक्ष भारत में आकर अपने देश की भाषा बोलते हैं तो हमारे प्रतिनिधि अंग्रेजी भाषा में जुगाली करते नजर आते हैं और ऐसा प्रतीत होता है जैसे भैंस के आगे बीन बजे और भैंस खड़ी पगुराये। कहने का तात्पर्य है कि हमारे देश के नेताओं को चाहिए कि वे भी अपनी राजभाषा में ही बातचीत करें और द्विभाषीय अनुवादक की सहायता से अपना वक्तव्य रखें।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जब दक्षेस देशों से आए नेताओं से राजभाषा हिन्दी में बातचीत की तो न केवल उनका मान बढ़ा बल्कि भारत के संविधान का मान बढ़ा, भारत का मान बढ़ा और हिन्दी का मान बढ़ा। मोदी जी ने श्रीलंकाई नेता महिंद्रा राजपक्षे के साथ भी हिन्दी में ही बातचीत की जबकि राजपक्षे अंग्रेजी में बात कर रहे थे, जिसे मोदी जी अच्छी तरह समझ पा रहे थे, वे चाहते तो स्वंय उसका उत्तर अंग्रेजी में दे सकते थे लेकिन उनके लिए अनुवादक की व्यवस्था की गई और उन्होंने अपनी सारी बातें हिन्दी में ही की। इससे देश विदेश में अच्छा संदेश गया है। साथ ही मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब अपनी भाषा में बातचीत करेगा क्योंकि आंख से ऑख अपनी ही भाषा में मिलाई जा सकती है। मोदी जी की ऐसी सोच के पीछे एक कारण ये भी हो सकता है कि वे भारत के ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जिनका जन्म अंग्रेजों के शासन काल में नहीं हुआ, बल्कि अंग्रेजी सत्ता समाप्त हो जाने के बाद स्वतंत्र भारत में हुआ है इसलिए वे विदेशी भाषा की दासता के भाव से मुक्त हैं । उन्होंने विदेशी नीति के क्षेत्र में हिन्दी भाषा का इस्तेमाल करके भाषायी गुलामी से मुक्त होने की पहल की है । मोदी जी की इस पहल पर हर भारतवासी को फख्र होगा। हम लोगों का भी यह दायित्व बनता है कि प्रधानमंत्री जी की इस कोशिश को आगे बढ़ायें और हिन्दी भाषा की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तां हमारा

शंकाएं हमारे साथ विश्वासघात करती हैं और उन अच्छाईयों से दूर रखती हैं जिन्हें हम पा सकते हैं।

शेक्सपीयर

बिना विचार के सीखना परिश्रम नष्ट करना है और बिना शिक्षा प्राप्त किए विचार करना भयावह।

कन्फ्यूशियस

सीख

प्रेम लता नंदा, मानचित्रकार डिविजन-।
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी.,चण्डीगढ़

अतीत की यादों में खोई सुमन को सब कुछ याद आ रहा था। आंखों में आंसू थे और साथ मे बीते दिनों के चलचित्र। सुमन जब 22 साल की हुई तो माता-पिता को उसकी शादी की चिंता सताने लगी। अच्छे वर की खोज प्रारम्भ हो गई। सुमन के पास बी.एड. की डिग्री थी और वह सरकारी स्कूल में अध्यापिका थी। वो बहुत मेहनती एवं सहनशील लड़की थी। बच्चे उसकी कक्षा में बहुत खुश रहते थे। सादगी उसकी वेश-भूषा से टपकती थी। इकलौती संतान होने के कारण वह माता-पिता की बहुत लाडली थी। बड़ी खोज-बीन के बाद उसके लिए एक इंजीनियर का रिश्ता आया जिससे सुमन की शादी तय हो गई। उस लड़के का नाम अभय था। अभय भी एक सुशील व होनहार लड़का था। सुमन व अभय की शादी बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हुई। सुमन अपने मायके (अम्बाला) से ससुराल (दिल्ली) आ गई। उसने अपना तबादला भी अम्बाला से दिल्ली करा लिया। धीरे-धीरे वह अपने ससुराल में सबकी चहेती बन गई। सास-ससुर उसकी तारीफों के पुल बांधते नहीं थकते थे। कुछ समय बाद घर में नई खुशी की आहट हुई। वह मां बनने वाली थी। कोई कह रहा था कि सुन्दर गुड़िया आने वाली है तो कोई कहता कि लड़का होगा परन्तु सुमन इन सबको अनसुना कर बच्चे के ख्यालों में खो जाती थी। समय बीता और उसने एक स्वस्थ व सुन्दर बच्चे (लड़के) को जन्म दिया। मायके व ससुराल दोनों जगह खुशियां मनाई गई। नामकरण संस्कार के उपरांत बच्चे का नाम अजय रखा गया। अजय सबका खास कर अपने दादा-दादी का लाडला था। सास-ससुर सुमन की बहुत तारीफ करते और सबको कहते कि सुमन ने उनके घर को चिराग देकर खुशियां ही खुशिया भर दीं। अभय भी अपनी नौकरी में बहुत तरक्की करता गया। अजय जब तीन वर्ष का हुआ तो एक अच्छे स्कूल में उसका दाखिला हो गया। उसे स्कूल छोड़ने व लाने के लिए अभय ने अपने ड्राइवर की ड्यूटी लगा दी। अभय व सुमन अपने कामों से वापस आकर अजय के साथ खूब खेलते। ऐसे ही समय बीतता गया व उनकी शादी की पांचवी सालगिरह आ गई। अभय ने सुमन को सुबह ही बोल दिया कि आज वह जल्दी घर लौट आयेगा और वह सपरिवार बाहर खाना खाने जायेंगे। साथ ही अभय ने सुमन को शाम को लाल साड़ी पहनने को कहा जो वह उसके लिये लाया था।

दोपहर बाद सुमन स्कूल से वापस आई। खाना खाकर थोड़ा आराम किया और फिर नहा कर तैयार होने लगी। साथ ही उसने सास-ससुर को तैयार होने के लिए कह दिया। उसने अभय की भेंट की हुई लाल साड़ी पहनी, आइने के सामने खड़ी होकर हल्का सा मेकअप किया। आइने मे वह अपने आप को ही देख कर शर्मा गई। अब सारे घर वाले तैयार होकर ड्राइंग रूम में बैठ गये और अभय का इंतजार करने लगे। एक घंटा, दो घंटे यहां तक कि तीन घंटे बीत गये पर अभय नहीं आया। इसी बीच उन्होनें अभय को फोन भी किया पर उसने फोन नहीं उठाया और अभय के एक मित्र को फोन किया तो पता चला कि अभय तो दो घंटे पहले ही आफिस से निकल गया था। सबकी चिंता बहुत बढ़ गई थी। तभी घर के दरवाजे की घंटी बजी। सुमन भागी-भागी गई और उसने दरवाजा खोला। सामने दो पुलिस वाले खड़े थे। अभी सुमन कुछ बोलती इससे पहले ही उसके ससुर भी दरवाजे पर आ गये। तब एक पुलिस वाले ने उनसे पूछा कि क्या अभय का घर यही है। उसके ससुर ने हां कहा और पूछा कि क्या बात है। उन्होनें उन्हें बाहर आने को कहा। सुमन दरवाजे पर ही खड़ी थी। उसने ससुर की इतनी आवाज सुनी, क्या हुआ, अभय कैसा है"। दबी आवाज में जवाब था, धीरज रखिये, भगवान की मर्जी के आगे कुछ नहीं चलता"। सुमन तेजी से उस तरफ भागी जहां उसके ससुर खड़े थे। पीछे-पीछे उसकी सास भी पहुंची और चिल्लाई, क्या हुआ।" सुमन के ससुर बोले,हमारा अभय नहीं रहा।" फिर तो चीखों से सारा घर गूंज उठा। सुमन के ससुर जैसे-तैसे पुलिस वालों के साथ चले गये। सुमन समझ चुकी थी कि उसकी खुशियों को ग्रहण लग गया है। धीरे-धीरे घर में पड़ोसियों का तांता लग गया और फिर रिश्तेदार भी आने लगे। अगले दिन अभय का दाह-संस्कार कर दिया गया। सुमन का जीवन सूना हो चुका था। सब कुछ बदल गया था। जो सास पहले हर वक्त प्रशंसा करते नहीं थकती थी उसका व्यवहार भी सुमन के प्रति काफी बदल गया था। सुमन ने अपने आप को एक कमरे मे बंद कर लिया था। वह हर वक्त रोती रहती। एक दिन सुमन ने अपने ससुर की बात सुन ली जो उसकी सास से कह रहे थे, सुमन के माता-पिता को बुलाकर उसे मायके भेज देते हैं नही तो कल अगर कुछ गलत हुआ तो लोग हमें दोष देंगे।" सुमन के माता-पिता आये और उसे अपने साथ ले गये। सुमन का तबादला भी अम्बाला हो गया। सुमन के पिता ने उसे समझाते हुये कहा, बेटा, वक्त आदमी को बहुत कुछ सीखा देता है, अब तुझे अपने बेटे के लिए जीना है, तू अपने आप को मजबूत बना और चट्टान की तरह अडिग बनकर हर तूफान को सहना सीख। तूझे अपने बेटे को सफलता की बुलंदियों पर पहुंचाना है, ये ही तेरा लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि हम तो उस सूखे पेड़ की तरह हैं जो कभी भी गिर सकता है।"

पिता के इन शब्दों ने सुमन को बहुत हौंसला दिया। उसने दिन-रात एक करके अजय को एक आई.

ए.एस. आफिसर बनाने की ठान ली। समय बीता, माता-पिता गुजर गये और अजय बड़ा होता गया। सुमन की लगन, अपनी मेहनत और ईश्वर की कृपा से अजय ने आई.ए.एस. की परीक्षा पास कर ली और अच्छे पद पर आसीन हो गया। सुमन की उम्र भी बढ़ रही थी तो उसने सोचा कि रिटायर होने से पहले बेटे की शादी कर दे। अखबार के जरिये अजय के लिए एक बड़े घर का रिश्ता आया और उसकी शादी अंकिता नाम की लड़की से हो गई। सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा। लगभग एक वर्ष बाद सुमन के यहां एक पोते ने जन्म लिया जिसका नाम ऋषि रखा गया। धीरे-धीरे अंकिता का व्यवहार अपनी सास (सुमन) के प्रति बदलने लगा। वह एक बड़े घर की बेटी थी तो उसे अपने मायके का बहुत घमंड था। अपने मायके वालों के सामने वह सुमन को हीन समझती थी। सुमन सब समझती थी पर बेटे के कारण चुप रहती थी। जब ऋषि 6 वर्ष का हुआ तो सुमन की रिटायरमैंट हो गई। अब सुमन सारा दिन घर पर रहती इसलिए उसने अपने पोते की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। लेकिन अंकिता फिर भी हर समय अपने पति अजय के कान भरती रहती। उसने एक दिन अंकिता को अजय से यह कहते सुन लिया,देखो जी, मां के लाड़-प्यार की वजह से ऋषि बिगड़ने लगा है। मां का सामान भी घर में इधर उधर पड़ा रहता है, मुझे अपनी सहेलियों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता है, अब मैं मांजी के साथ नहीं रह सकती।" सुमन को इस बात से बहुत आघात लगा पर वह चुप रह गई। एक दिन सुमन को कहा गया कि सभी देहरादून जा रहे हैं इसलिए वह भी तैयार हो जाये और अपने कपड़े/बिस्तर वगैरह बांध ले। उसने अटैची तैयार कर ली और साथ चल दी। देहरादून पहुंच कर अजय सभी को लेकर पैदल घूमने निकल पड़ा। वह एक आश्रम में जा पहुंचा और सुमन को बाहर एक बैंच पर बिठा कर बोला,मां, तुम थक गई हो, यहां बैठकर थोड़ा आराम कर लो। मैं, अंकिता और ऋषि थोड़ा आगे तक घूम कर वापस आ जायेंगे।" सुमन वहां बैठ गई और अजय की वापसी का इंतजार करने लगी। तभी उसने अधेड़ उम्र की एक महिला को अपने पास आते देखा। उस महिला ने पास आकर कहा,सुमन जी, मेरा नाम पार्वती है। एक सज्जन आपको बेसहारा बताकर यहां छोड़ गया है। आप आश्रम के अंदर चलिये, यहां आपके रहने की व्यवस्था हो गई है।" सुमन हैरानी से उसे देखकर बोली,बहन, आपको कोई गलतफहमी हुई है। मैं तो अपने आई.ए.एस. बेटे के साथ यहां घूमने आई हूं। वो मुझे यहां बिठा कर गया है, अभी आता ही होगा।" तब वह महिला बोली,बहन, मैं इस आश्रम की मुखिया हूं, आप जैसी बहुत सी महिलायें हैं जिन्हें उनके बच्चे यहां पर छोड़ जाते हैं और वह बरसों से यहां रह रही है। अब आपको भी यहीं रहना है।" यह सुनकर सुमन हक्की बक्की रह गई। कुछ देर बाद जब थोड़ी संयत हुई तो एकदम बात दिमाग में आ गई और वह पार्वती से बोली,ठीक है बहन, मैं यहां रह लूंगी पर अभी मुझे एक बार अभी अपने घर जाना है, यदि आप मेरे साथ चलें तो बहुत मेहरबानी होगी।" पार्वती सुमन के साथ

अम्बाला आने को तैयार हो गई और वह दोनों टैक्सी लेकर उसी समय अम्बाला के लिए निकल पड़ीं। सुमन के पास घर की एक चाबी थी इसलिए दोनों ताला खोलकर घर के अन्दर पहुंच गई। सुमन ने तभी अपने पड़ोसी (शर्मा जी) को बुलवाया और कहा,शर्मा जी, आपका मकान मेरे मकान के साथ लगता है और मैं जानती हूं कि आप ने कई बार इसे खरीदने की ईच्छा जताई थी तो आज मैं इसे आपको बेचना चाहती हूं लेकिन सारी कागजी कार्रवाई एक ही दिन में हो जानी चाहिए। घर में पड़ा सामान अजय आने के बाद निकाल लेगां" शर्मा जी पहले तो अवाक् रह गये पर थोड़ी देर बाद उन्होनें हां कर दी। उसी दिन मकान के कागजात तैयार हो गये और शर्मा जी ने सुमन को तय रकम देकर मकान खरीद लिया। सुमन पैसे लेकर उसी टैक्सी में पार्वती के साथ वापस देहरादून की ओर निकल पड़ी। देहरादून पहुंच कर उसने आधे पैसे आश्रम के नाम जमा करा दिये और आधे अपने पोते के नाम और साथ में लिख दिया कि यह पैसे उसका पोता 21 वर्ष का होने के उपरांत ही इस्तेमाल कर सकेगा। 15 दिन बाद अजय ने आश्रम मे फोन किया और सुमन से कहने लगा कि वह, अंकिता और ऋषि के साथ उसे मिलने देहरादून आ रहा है। अगले दिन दोपहर को वे तीनों सुमन से मिलने पहुंच गये। उन्हें देखकर पहले तो सुमन की ममता उमड़ आई लेकिन फिर उसने अपने आपको नियंत्रित किया और ऐसा व्यवहार किया जैसे वह उनको जानती ही नहीं। अजय ने सुमन के पांव पकड़ कर रोना शुरू कर दिया और अपनी गलती मानकर माफी मांगने लगा और कहने लगा,मां, मेरी आंखें खुल गई हैं, तुम्हारे पोते ने मेरी आंखें खोल दी जब उसने मुझे व अंकिता से कहा कि जब हम बूढ़े हो जायेंगे तो वह हमें भी आश्रम छोड़ देगा। माँ, अंकिता भी बहुत शर्मिन्दा है, हम सब तुम्हें लेने आये हैं।" तब सुमन ने अजय के कंधे पर हाथ रखते हुये कहा,बेटा, जो सीख मैं तुम्हें नहीं दे सकी, वो तुम्हारे बेटे ने तुम्हें दे दी पर अब मैं तुम्हारे साथ वापस अम्बाला नहीं जाऊंगी। मैनें यही रहने की आदत डाल ली है और मुझे अब यहां रहना अच्छा भी लगता है।" इतना सुनकर वह तीनों रोने लगे और ऋषि बोला,दादी, अगर आप हमारे साथ नहीं चलेंगी तो मैं भी यहीं आपके पास रहूंगा।" यह सब देखकर पार्वती जो पीछे खड़ी सब सुन रही थी, उनके बीच आ खड़ी हुई और सुमन से बोली,बहन, तुम किस्मत वाली हो जो तुम्हारा परिवार अपनी गलती मानकर तुम्हें यहां से लेने आया है। सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते। अपने बहू व बेटे को माफ कर दो और इनके साथ घर लौटकर बाकी जीवन इनके साथ खुशी-खुशी बिताओ। इनके लिए तथा अन्य लोगों के लिए यह बहुत बड़ी सीख है।" सुमन भी वापस चलने के लिए अपना सामान बांधने लगी।

हाय रे तबादला

कुलदीप कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी., चण्डीगढ़

सामने की बालकनी में बिंदिया ने मोबाईल फोन पर किसी से बात करते हुए कहा, आज सुबह न जाने कहाँ से ई टूनटना बजा और ये अपने कुछ कागज लेकर कहीं चलते हुए बोला- मैं कुछ देर से आउँगा, तुम लोग खाना खा लेना... हो सकता है मुझे दिल्ली जाना पड़े।" आजकल कुछ परेशान भी रह रहे हैं। ये सरकारी दफ्तर भी न जाने किस जन्म का कर्ज चुकाने में लगे हैं। रात को सपने में किसी ट्रकफेल का जिक्र कर रहे थे। न जाने ई कौन सी चिड़िया का नाम है। हमके पता होत तो इस चुड़ैलवा को पकड़ के गर्दने ही मरोड़ देते। न इन्हें रात को नींद है न दिन को चैन। बस इधर से उधर कागजों की पोटली लिये हुए कहाँ-कहाँ घूमते रहते हैं। अभी तीन साल ही हुए हैं लखनऊ आए। मेरे शादी होने से पहले तो ये मध्यप्रदेश के किसी शहर में थे। जब भी फोन करते एक बार ट्रकफेल का जिक्र जरूर करते। उन्होने एक बार बताया था मुझे ये नौकरी के दस साल हुए और अभी तक तीन बार ट्रकफेल हो चुका है। जब शादी हुई तो ये लखनऊ में थे और आज ये पता नहीं क्यों परेशान हैं? हमका तो लगत है... फिर से उहे चिरेई तो परेशान न कर रही है?

अरे हां बिंदिया के बारे में तो बताना भूल ही गया। बिंदिया गजोधर की पत्नी जो कि उनके ही राज्य के किसी गांव से 5वीं पढ़ी लिखी हैं। बिंदिया वैसे तो खड़ी हिन्दी नहीं जानती थी लेकिन कई बार सिखाने पर टूटी-फूटी बोलने का हर संभव प्रयास करती। गांव में पालन-पोषण होने के करण अभी वह पूरी तरह से शहरों के जीवन की रफ्तार से रूबरू नहीं हो पायी हैं। वह ज्यादा पढ़ी नहीं इसका उसे या उसके पति को अफसोस नहीं था क्योंकि बिंदिया का दिमाग काफी तेज था। वह सुन्दर भी बहुत थी नाक-नक्श भी बहुत अच्छा था। उसके ट्रकफेल कहने का अर्थ तबादले (Transfer) से था। घर का काम व समाज में रहने का तालमेल वह बहुत अच्छे तरीके से बना रखी थी। उसकी इस प्रकार की सोच और घर की जिम्मदारी को बखूबी निभाने से उसका पति यानि गजोधर उससे काफी खुश रहता है।

गजोधर यहीं लखनऊ में किसी भारत सरकार के दफ्तर में प्रमोशन होने के बाद बड़ा बाबू बनकर तबादले पर आया था। गजोधर का भी दिमाग बहुत तेज है। तभी तो वह अपनी इस बाहर साल की नौकरी में तीन बार प्रमोशन लेकर आज राजपत्रित अधिकारी बनकर पुणे जा रहे हैं। मैं उनके बारे में ज्यादा तो नहीं जानता था लेकिन पिछले साल उनसे बातचीत शुरू हई और हम एक-दूसरे के काफी नजदीक आ गए। उनके विचार सुंदर और विवेकपूर्ण होते हैं।

कुछ ही दिन पहले मैंने उन्हे उनकी प्रमोशन और राजपत्रित अधिकारी बनने पर बधाई देने उनके

घर गया और उनसे बातचीत की। उन्होंने बिंदिया को आवाज दी और कहा कि वह कुछ चाय नाश्ते का इंतजाम करे व दोपहर का खाना भी बना ले। इस बातचीत के दौरान मैंने उनसे इस तबादले पर गपशप करना शुरू कर दिया।

मैंने कहा तबादले पर बहुत परेशानियों का सामना कर पड़ता हैं। दफ्तर में काम करने के ढंग से लेकर परिवार के माहौल और वातावरण भी बदल जाता है। घर की व्यवस्था और उसे ठीक से सजाना। सबसे ज्यादा दिक्कत बच्चों की पढ़ाई में आती है। एक शहर से दूसरे शहर में जाने पर उनके स्कूल और पढ़ाई में काफी फर्क पड़ जाता हैं। मैं उनको इस तबादले पर होने वाले कठिनाईयों पर कहा रहा था और वे बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे और हल्की-सी मुस्कान चेहरे पर बिखेर रहे थे।

इसके बीच उनकी सोच समझ कुछ अलग ही थी। मेरे चुप हो जाने के बाद उन्होंने मेरे सामने कुछ तर्क दिया जो काफी हद तक विवेकपूर्ण लग रहा था। उन्होंने बताया कि जब किसी का तबादला होता है तो उसके पीछे सरकारी काम-काज का ध्यान रखा जाता है। दफ्तर का माहौल बनाए रखना व्यक्ति विशेष से ऊपर होता है। उनकी बात को सुनने के बाद मैं यह समझने की कोशिश करने लगा कि तबादला सही है .....!

जिन्दगी एक दरिया है

कुलदीप कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी.डी.सी., चण्डीगढ़

जिन्दगी एक दरिया है
जिसमें
आााओं का बहता पानी हैं
कागज की कश्ती में
हम दो अनजाने, मुसाफिर हैं
और दूर तलक अंधेरा है,
जिन्दगी एक दरिया है
अपनों का तो एक बहाना है
यह दुनिया सरायखाना है,
और इस सरायखाने में
कौन कब तक रूकेगा
किसी ने नहीं जाना है
जिन्दगी एक दरिया है

जिंदगी हवा का झोका हैं
आत्मा जहाँ भटकती है।
मिट्टी के इस खिलौने में
जब तक सांसो की डोरी है
तब तक खींचातानी है
जिन्दगी एक दरिया है
यहां फूल भी खिलते है
हँसी चाँद भी चमकता है
सितारो का मेला है
पर रात बड़ी छोटी है
सुबह के पहले गुम हो जाना है
जिन्दगी एक दरिया है
जिन्दगी एक दरिया है

हंसी के गोल गप्पे

दीप चन्द, अधिकारी सर्वेक्षक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी०डी०सी०, चण्डीगढ़

- एक आम के पेड़ के नीचे दो आलसी आदमी आकर लेट गए। इतने में एक आम उन दोनों लेटे हुए आलसियों के बीच में गिरा। दोनों आलसियों ने उस आम को पड़े हुए देखा एवं खाना चाहा परन्तु आलस्य की वजह से खाने के लिए उस आम को उठा नहीं पा रहे थे। इतने में एक आदमी उधर से गुजरा तो उन दोनों आलसियों में से एक ने कहा कि अरे भाई! जरा इधर आना। तो वह आदमी उस आलसी के पास आकर बोला - क्या बात है। तो एक आलसी ने कहा - यह आम उठाकर मेरे मुंह में डाल दो। उस आदमी ने उस आम को उस अलासी के मुंह में डाल दिया और चलने लगा। तो उस आलसी ने कहा कि अरे भाई! कहां जा रहे है? उस आदमी ने कहा कि अब क्या है? तो आलसी ने कहा कि यह गुठली कौन निकालेगा? तभी दूसरे आलसी ने उस आदमी से कहा - यह कैसे आम की गुठली को निकालेगा। यह हो बहुत ही आलसी है। पूरी रात कुत्ता मेरा मुंह चाटता रहा उससे कहता रहा कि इस कुत्ते को दूर हटा दो। लेकिन यह तो इतना बड़ा आलसी है कि इसने इस कुत्ते को नहीं हटाया।

- एक बार तीन मूर्ख नदी के तट पर घूमने गए। वहां नदी के किनारे एक पेड़ था। फिर कुछ देर के बाद उनमें से एक मूर्ख बोला - यदि इस नदी में आग लग जाए तो इसकी मछलियां कहां जाएंगी। दूसरा मूर्ख - देख नहीं रहे हो यह पेड़, इस पर चढ़ जाएंगी। तीसरा मूर्ख - अरे क्या! वे गाय-भैंस है तो पेड़ पर चढ़ जाएंगी।

- दो दोस्त थे जिनमें एक अंधा तथा दूसरा हकला था। अंधा साइकिल चलाना जानता था जबकि हकले को साइकिल चलानी नहीं आती थी। एक दिन अंधे को कही जाना पड़ा तो उसने हकले से कहा कि मैं साइकिल चलाउंगा और तुम आगे साइकिल में बैठकर मुझे रास्ता बताते रहना कि कब ब्रेक लगानी है, कब नहीं। इस पर हकला राजी हो गया। जब अंधे ने हकले को साइकिल पर बैठाकर आगे की तरफ चला तो कुछ दूर जाकर हकले को सड़क के बीच में एक बड़ा गढ्ढा दिखाई दिया। हकले की बेचैनी बढ़ गई तथा साइकिल रुकवाने के लिए हकले ने बताना चाहा परन्तु हकले के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल पा रहा था। बस उसके मुंह से 'ग' अक्षर ही निकल रहा था। हकला बार-बार 'ग' 'ग' ही बोल पा रहा था। अंधा समझ नहीं पा रहा था और वह साइकिल चलाता जा रहा था। जब दोनों साइकिल सहित गढ्ढा में गिर पड़े तब जाकर हकले के मुंह से झटका लगने से 'ढा' निकला। तब अंधे ने पूछने पर हकले ने बताया कि क्या कर 'ग''ग''ग' अक्षर तो मेरे मुंह से निकल रहा था लेकिन 'ढा' अक्षर नहीं निकल रहा था।

दो शब्द मधुर बोलना आसान नहीं

लवको कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ

इंसानियत क्या चीज़ है, गर ज्ञान नहीं है।
दो शब्द मधुर बोलना आसान नहीं है।।

पत्थर ने मूर्तिकार से कहा था क्या सुनो।
तेरे बिना मेरा कोई वजूद नहीं है।।

तू भूख से तड़पे, बनूँ मैं देवा कहीं।
तू है महान, देवता महान नहीं है।।

फल-फूल, मिष्ठान से, मंदिर महक उठा।
तेरी कला का कोई कद्रदान नहीं है।।

मंदिर की आड़ में जुगाड़ गाँठने वालों।
भगवान तो भगवान है - पाषाण नहीं है।।

अपनी ही नज़र में गिरे कोई तो क्या कहें।
उससे बड़ा समझो कोई नादान नहीं है।।

जीने के लिए लोग सभी जी रहे, लेकिन।
जीने का अर्थ क्या - अगर ईमान नहीं है।।

पर्यावरण क्या चीज है

शशांक कुमार सिंह, अवर श्रेणी लिपिक
पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ

जिस आवरण में हम जीव जीवन पा रहे।
पर्यावरण है चीज़ क्या, हम वो बता रहे।।

पावन धरा की वायु को क्यों दूषित बना रहे।
आने वाले कल को कैसी सौगात देने जा रहे।।

शिक्षा बढ़ी तो आचरण-ईमान क्यों गिरा रहे।
स्वार्थ के लिए हम मनुयष्ता की बलि चढ़ा रहे।।

परिस्थिति की समझ को नासमझी बना रहे।
दस्तक विनाश की अनसुनी किये जा रहे।।

कूड़ा जहाँ-तहाँ बहा रहे - न सोचते।
वातावरण को हम विषाक्त क्यों बना रहे।।

उपवन हरे-भरे कहीं जंगल, नदी और पर्वत उजाड़ कर।
चढ़कर विमान जा रहे ग्रह और अंतरिक्ष को पार कर।।

नदियों में मूत्र-मल 'प्रकाश' क्यों बहा रहे।
मानव, पशु-पक्षी व जीव उसी से प्यास बुझा रहे।।

चाहिए गर बेहतर कल तो आज संभल जाइए।
विकास संग सुन्दर-स्वच्छ वसुंधरा को भी लाइए।।

आज की बेटी की सोच

एम०पी० मण्डल, अवर श्रेणी लिपिक
पंजाब, हरियाणा एवं चण्डीगढ़ जी०डी०सी०, चण्डीगढ़

यह कहानी है, बाप-बेटी के बीच संवाद की, बदलते समय के अनुसार बदल रही बेटियों की सोच की, उनके आदर्श की। बेटी (सीमा) जो कि मात्र 14 वर्ष की है, अपनी गुड़िया के लिए लहंगा सिल रही होती है, पास ही बरामदे पर उसके पापा पेपर पढ़ रहे हैं, उसकी मां रसोईघर में खाना बनाने मे व्यस्त है और सीमा अपने गुड़िया को दुल्हन की तरह सजा रही होती है:-

सीमा..... पापा, देखो मेरी गुड़िया बिल्कुल दुल्हन लग रही है न..

पापा..... हां, तेरी गुड़िया तो बड़ी हो गई है, उसके लिए दूल्हा ढूंढ़ना होगा,

सीमा..... पापा आप दूल्हा ढूंढ़ दोगे।

पापा..... हां, मै तेरी गुड़िया के लिए श्री राम जैसा दूल्हा ढूंढ़ दूंगा।

सीमा..... नहीं पापा श्री राम जैसा नहीं चाहिये, उन्होंने माता सीता को कोई सुख नही दिया, उनकी अग्नि परीक्षा ली उसके बाद प्रजा की खुशी के लिए सीता को जंगल में भटकने के लिए छोड़ दिया, ऐसे लड़के से मैं अपनी गुड़िया की शादी नहीं कर सकती,

पापा..... ठीक है, तू चिंता मत कर 'श्री कृष्ण' जैसा दूल्हा ढूंढ़ दूंगा।

सीमा..... श्री कृष्ण की तरह....! जो राधा से प्यार करे, रूकमणी से शादी करे और गोपियों के साथ रास-लीला करे। नहीं..... ऐसे लड़के से मैं अपनी गुड़िया की शादी नहीं कर सकती,

पापा..... ठीक है बेटी, अर्जुन की तरह धनुर्धारी तो चलेगा।

सीमा..... नहीं पापा, अर्जुन के जैसा भी नहीं चलेगा, अपनी पत्नी को जुए में हारने वाले लड़के के हाथ में मैं अपनी गुड़िया का हाथ नहीं दे सकती,

पापा..... अब मैं क्या करूं बेटी, तुम्हारी गुड़िया के लिए दूल्हा कहां से लाऊँ।

सीमा..... रहने दो पापा, मै आज के भारत की बेटी हूँ, पहले मैं अपनी गुड़िया को पढ़ा-लिखा कर काबिल बनाऊंगी, उसे इतना गुणवान बनाऊंगी कि लड़के वाले मेरी गुड़िया का हाथ मांगने खुद आयेंगे, उस वक्त मेरी गुड़िया जिसको अपने काबिल समझेगी उसी से उसकी शादी होगी।

पापा..... बहुत अच्छा,

उनका ध्यान पेपर से हट गया, वे सोच में डूब गये, आज बात सीमा की गुड़िया की हो रही है, कुछ दिन बाद मेरी गुड़िया (सीमा) बड़ी होगी, उस वक्त कहां से दूल्हा आयेगा, जो सीमा के काबिल होगा। मेरी बेटी के कितने उच्च विचार हैं वह अपनी गुड़िया का हाथ कितना सोच-समझ कर लायक लड़के के हाथ में देने की बात कर रही है, और मैं क्या कर रहा हूँ अपनी गुड़िया के लिए, वे सोच में डूब गये, तभी अचानक...

सीमा..... पापा, आप क्या सोच रहे हो,

पापा..... कुछ नही, कुछ दिन बाद तू भी बड़ी हो जायेगी, और अपने ससुराल चली जायेगी,

सीमा..... पापा, मुझे बड़ा नही होना, ससुराल नही जाना,

पापा..... क्यों बेटी, हर लड़की का सपना होता है कि उसे अच्छा ससुराल मिलें,

सीमा..... होता होगा, पर मुझे शादी नहीं करनी, शादी होने के बाद आप मुझे पराया कर दोगे,

पापा..... नहीं बेटी, ऐसी बात नहीं है,

सीमा..... पापा, मुझे याद है, बुआ हमारी अपनी थी, आपने और दादी ने उनकी शादी के बाद पराया कर दिया था, वो ससुराल वालों से परेशान होकर दादी के पास रोती थी, दादी कहती, बेटी तुम्हारे तकदीर में यही लिखा था, शादी तोड़ी नही जाती। जैसे भी हो तुझे वहीं रहना होगा, मायके से बेटी डोली मे विदा होती है और ससुराल से अर्थी पर, यही लड़की का भाग्य है।

पापा..... बेटी ऐसी बात नहीं है,

सीमा..... पापा, आपने भी बुआ के लिए कुछ नहीं किया,

पापा..... बेटी, उस समय कि बात कुछ और थी, अब सब ठीक है,

सीमा..... पापा, कुछ नहीं बदला, आपका समाज उस समय जैसा था, आज भी वैसा ही है, मेरे साथ भी वही होगा और आप चुपचाप देखोगे,

पापा..... नहीं बेटी, तुम्हारे साथ ऐसा कभी नहीं होगा, तुम्हारे ससुराल वाले अच्छे होंगे,

सीमा..... इसकी कोई गारंटी है,

पापा..... आशा करता हूँ, कि अच्छा ससुराल और अच्छा दूल्हा ढूंढ़ पाऊं,

सीमा..... पापा, मेरी थोड़ी सी अंगुली जल गई थी, तो मैं कितना रोई थी, उन्होंने बुआ को जला दिया कितनी रोई होंगी, 'सीमा भी रोने लगी' सीमा के पापा ने पेपर फेंक कर सीमा को गले लगा लिया, और खुद भी रोने लगे, रोने की आवाज सुनकर सीमा की मम्मी दौड़ कर आई और पूछने लगी, क्या हुआ बाप-बेटी क्यों रो रहे हो?

पापा..... मैंने सीमा को कहा कि तुम्हें भी ससुराल जाना होगा, इस बात पर वह रो रही है,

मम्मी..... अभी शादी कहां हो रही है, आज इतना रो रहे हो, तो विदाई के समय कितना रोओगे, चल बेटी, पापा तुझे चुप क्या करायेंगे ये तो खुद रो रहे है.....

'सीमा को लेकर उसकी मम्मी उसके कमरे में ले गई, सीमा बहुत रो रही थी, वह रोते-रोते सो गई इधार 'पापा' बरामदे में बैठे बेटी की बातों से चिंतित, रो रहे थे'

मम्मी..... ऐ जी... क्या हुआ, अब चुप हो जाओ।

पापा..... मेरी बहन को उसके ससुराल वालों ने जलाकर मार दिया था, वो घटना सीमा को याद है और दिल पर डर बन कर बैठ गयी है, वह शादी के नाम से डरती है,

मम्मी..... उस समय तो वह सिर्फ 8 साल की थी,

पापा..... हां, उसे सब याद है....

मम्मी.....अब क्या होगा जी?

पापा..... उसके इस डर को धीरे-धीरे निकालना होगा, आज तुम्हारे सामने अपने आप से एक वादा करता

हूँ, कि मैं अपनी बेटी का हाथ, उसी के हाथ में दूंगा जो उसे पलकों पर बैठा कर रखे। इसके लिए सीमा को गुणवती बनाना होगा ताकि ससुराल वाले उसकी कद्र करें।

मम्मी.... हां जी, आप ठीक बोल रहे हो, जो गलती एक बार हुई, वह दोबारा नहीं होगी,

पापा..... मैनें अपनी बहन को खोया है, बेटी नही खो सकता, मेरी बेटी का दूल्हा वही होगा जो उसे और उसकी भावनाओं को समझे, चाहे वो मेरी पसंद का हो या मेरी बेटी के पसंद का मैं अब इस समाज के डर से कुछ भी खोने के लिए तैयार नहीं हूँ।

उपरोक्त संवाद ईशारा मात्र है, दुनिया की बदलती तस्वीर में आज की बेटियां कल का भविष्य है, अत: हम सब को चाहिए कि समय के अनुसार अपनी सोच बदलें और बेटा-बेटी में भेद (अन्तर) मिटाते हुए बेटियों को भी बेटों वाली सारी सुविधाएं दें और एक बेहतर समाज का निर्माण करें।

बेटी बनकर आयी हूँ, माँ-बाप के जीवन में ।

बसेरा होगा कल, किसी और के आंगन में ।।

क्यों ये रीत, भगवान ने बनाई होगी ।

कहते हैं, आज नहीं तो कल पराई होगी ।।

देकर जनम जिसने हमें, पाल-पोसकर बड़ा किया ।

वक्त आया तो, उन्हीं हाथों ने हमें विदा किया ।।

क्यों रिस्ता ये, इतना अजीब होता है ।

क्या बस यही, बेटियों का नसीब होता है ।।

भारत के महासर्वेक्षक के चण्डीगढ़ दौरे की कुछ झलकियां

डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव, भारत के महासर्वेक्षक और मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र सर्वे कॉम्प्लेक्स, चण्डीगढ़ में वार्तालाप करते हुए

सर्वे काम्प्लेक्स, चण्डीगढ़ में डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव, भारत के महासर्वेक्षक स्टाफ को संबोधित करते हुए

स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस की कुछ झलकियां

तिरंगा...सबसे ऊँचा

जन-गण-मन...

सबसे आगे ..... मैं

दुनिया है ..... हमारी

मेरी भी तो सुन लो न

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

हिन्दी समारोह-2013 की कुछ झलकियां

हिन्दी समारोह-2013 के अवसर पर
मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र का
स्वागत करते श्री अमरेन्द्र कुमार सिंह, अधीक्षक सर्वेक्षक

हिन्दी समारोह के अवसर पर मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर
महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र और अन्य अधिकारी गण

हिन्दी समारोह के अवसर पर उपस्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग का स्टाफ

हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का दृश्य

मीडिया से रूब-रू होते
मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-2014 की कुछ झलकियां

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-2014 का शुभ-आरंभ करते
मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करते
मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर महासर्वेक्षक

मेजर जनरल आर०पी० सांई, अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र और अन्य अधिकारी-गण

शेर-ओ-शायरी

हरिन्द्र पाल सिंह, सहायक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

ख्वाहिश नहीं मुझे मशहूर होने की।

आप मुझे पहचानते हो बस इतना काफी है।

अच्छे ने अच्छा और बुरे ने बुरा जाना मुझे।

क्योंकि जिसकी जितनी जरूरत थी,

उसने उतना पहचाना मुझे।

***

जिंदगी का फलसफा भी कितना अजीब है,

शामें कटती नहीं और साल गुजरते चले जा रहे है।

***

एक अजीब सी दौड़ है ये जिंदगी,

जीत जाओ तो कई अपने ही पीछे छूट जाते हैं

और हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं।

***

मुझे क्या हक है किसी को मतलबी कहूं,

मैं तो खुद अपने रब को मुसीबतों में याद करता हूं।

***

सहमा-सहमा डरा-डरा सा

चरनजीत सिंह, सहायक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।
देखने में तो जिंदा है लेकिन
भीतर से मरा–मरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

मंहगाई की मार से जेंबे तो हैं खाली
और ये दिल है कि भरा–भरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

भीतर से तो है कुछ और लेकिन
बाहर से कुछ और दिखने के चक्कर में ही
दिन–रात लगा रहता है ।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

अपना तो कुछ बने या न बने लेकिन
दूसरों का कैसे कुछ बिगाडे, हर दम
इन्हीं विचारों से इसका मन घिरा–घिरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

दूसरों को कैसे नीचे गिरा कर मैं खुद ऊंचा हो जाऊं,
हर पल इन्ही तरकीबों में ही लगा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

बाकी तो सब कुछ रखता है संभाले,
मगर ये खुद बिखरा–बिखरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

बहुत कुछ पा लिया है जीवन में फिर भी न जाने क्यों
ये लगता है कि जरा–जरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

हम तो लुट गये उन्हें पाने की खातिर और वो कहते हैं
कि यहां तो एक सरफिरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

अगर जीवन में कोई सच्चा साथी मिल जाए
तो ये जीवन पतझड़ में भी हरा–भरा सा रहता है।
सहमा–सहमा डरा–डरा सा रहता है।।

श्री अमिताभ बच्चन द्वारा लिखी कुछ पंक्तियां

हरिन्द्र पाल सिंह, सहायक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

गिरना भी अच्छा होता है
औकात का पता चलता है
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को
अपनो का पता चलता है।

जिन्हें गुस्सा आता है,
वो लोग सच्चे होते हैं,
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कुराते हुये देखा है।

सीख रहा हूं अब भी इंसानो को पढ़ने का हुनर—
सुना है चेहरे पे किताबों से ज्यादा लिखा होता है।

माँ

हरिन्द्र पाल सिंह, सहायक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

एक बार एक बच्चे की माँ मर गई और उसके पिता ने उसकी देखभाल की खातिर दूसरी शादी कर ली। कुछ दिन बाद पिता ने बच्चे से पूछा,बेटा, तुम्हारी नई मां कैसी है? नई माँ ज्यादा अच्छी है या पहली माँ अच्छी थी?" बच्चे ने कहा, पिताजी, पुरानी मां झूठी थी, नई माँ सच्ची है।" पिता को बहुत हैरानी हुई और उसने पूछा, वो कैसे?" तो बच्चे ने कहा, पुरानी माँ रोज कहती थी, बेटा ज्यादा शरारतें मत कर नही तो खाना नहीं दूंगी परन्तु फिर भी मैं रोज खूब शरारतें करता था और वो भी रोज पूरे मोहल्ले से मुझे ढूंढ के लाती और अपने हाथ से खाना खिलाती थी परन्तु नई माँ ने जब कहा कि मैं शरारतें करूंगा तो खाना नहीं मिलेगा तो उसने सचमुच मेरे शरारत करने पर मुझे पिछले तीन दिन से खाना नहीं दिया है।"

एक लड़का कालेज से घर लौटते वक्त बारिश में भीग गया। घर पहुंचा तो उसे भीगा हुआ देखकर

बहन ने कहा,थोड़ी देर और कालेज में नहीं रूक सकते थे।"

बड़े भाई ने कहा,घर से छाता लेकर नहीं जा सकते थे। अगर छाता नहीं था तो कहीं साईड में खड़े हो जाते।"

पिता ने कहा,खड़े कैसे हो जाते, जनाब को बारिश में भीगने का शौक चढ़ा होगा।"

इतने में माँ आई और उसके सिर पर टॉवल रखते हुये बोली,ये बारिश भी ना..... थोड़ी देर रूक जाती तो मेरा बेटा घर पहुंच जाता।"

माँ" तो माँ" होती है।

भगवान की भक्ति करने से शायद हमें माँ न मिले,
पर माँ की भक्ति करने से भगवान अवश्य मिलेंगे।

बहाने बनाम सफलता

हरिन्द्र पाल सिंह, सहायक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

- मुझे उचित शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नही मिला....
  उचित शिक्षा का अवसर फोर्ड मोटर्स के मालिक हेनरी फोर्ड को भी नहीं मिला।

- बचपन में ही मेरे पिता का देहांत हो गया था.....
  प्रख्यात संगीतकार ए.आर. रहमान के पिता का देहांत भी तभी हो गया था जब वह छोटा था।

- मैं अत्यंत गरीब परिवार से हूं.....
  पूर्व राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम आजाद भी गरीब परिवार से थे।

- बचपन से ही अस्वस्थ था.....
  ऑस्कर विजेता अभिनेत्री मरली मेटलिन भी बचपन से ही बहरी वअस्वस्थ थी।

- मैंने साइकिल पर घूमकर आधी जिंदगी गुजारी है....
  निरमा के करमन भाई पटेल ने भी साइकिल पर निरमा बेचकर आधी जिंदगी गुजार दी।

- मैं दुर्घटना में घायल हो गया और अपाहिज हो गया....
  प्रख्यात नृत्यांगना सुधा चन्द्रन के पैर नकली हैं।

- मुझे बचपन में मंद बुद्धि कहा जाता था....
  थामस अल्वा एडीसन को भी बचपन में मंद बुद्धि कहा जाता था।

- मैं इतनी बार हार चुका हूं कि अब हिम्मत नहीं.....
  अब्राहिम लिंकन 15 बार चुनाव हारने के बाद राष्ट्रपति बने।

- मुझे बचपन में ही परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी.....
  लता मंगेश्कर को भी बचपन में ही अपने परिवार का बोझ उठाना पड़ा।

- मेरी लम्बाई बहुत कम है.....
  सचिन तेंदुलकर की लम्बाई भी सामान्य से कम है।

- मेरी कम्पनी का तो दिवाला निकल चुका है.....
  विश्व की सबसे बड़ी शीतल पेय बनाने वाली कम्पनी पेप्सी कोला भी दो बार दिवालिया हो चुकी है।

- मेरी उम्र बहुत ज्यादा है.....
  विश्व प्रसिद्ध *KFC* के मालिक ने पहला रेस्तरां 60 साल की उम्र में खोला था।

- मेरा दो बार नर्वस ब्रेक डाउन हो चुका है, अब क्या कर पाऊंगा.....
  डिज्नीलैंड बनाने वाले वाल्ट डिजनी का तीन बार नर्वस ब्रेक डाउन हुआ था।

- मेरे पास पर्याप्त धन नहीं.....
  इन्फोसिस के पूर्व चेयरमैन नारायणमूर्ति के पास भी पर्याप्त धन नहीं था और उन्हें अपनी पत्नी के गहने बेचने पड़े थे।

कुछ लोग कहेंगे यह जरूरी नहीं कि जो प्रतिभा इन महानायकों में थी वह हम में भी हो, मैं सहमत हूं लेकिन यह भी जरूरी नहीं कि जो प्रतिभा आप में है, वह इन महानायकों में रही हो।

सार यह है कि आज आप जहां भी हैं या कल जहां भी होंगे इसके लिए आप किसी और को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते, इसलिए आज चुनाव कीजिये कि आपको सफलता और सपने चाहिए या खोखले बहाने।

जो मोदी की आलोचना कर रहे हैं, मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वे अपनी हाउसिंग सोसायअी का चेयरपर्सन बन जाएं। फिर बताएं कि कैसी मुश्किलें आती हैं। यहां तो एक शख्स के हवाले पूरा देश है।

सलमान खान, ऐक्टर

जीवन का रहस्य

चरनजीत सिंह, सहायक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

अभी तक जीवन सिर्फ धरती पर ही पाया गया है। क्या जीवन इस ब्राह्मण्ड के किसी दूसरें ग्रह पर भी है? यह एक रहस्य ही है और इस रहस्य को जानने की उत्सुक्ता ने इंसान को इसकी खोज पर लगा दिया है। हो सकता है कि भविष्य में यह पता चल जाए कि किसी दूसरे ग्रह पर भी हमारे साथी हैं। हम धरती का जो वर्तमान स्वरूप देख रहें हैं वह न जाने कितने अरबों खरबों वर्षो के रूपांतरण (Transformation) के फलस्वरुप हैं। इस मामले में हम बहुत भाग्यशाली हैं। हमें अपने भाग्य पर गर्व होना चाहिए। हमें तो छोटी-छोटी शिकायतों से ही फुरसत नहीं है । इस ब्राह्मण्ड की उत्पत्ति भी एक रहस्य ही है। गुरु नानक ने जपुजी साहिब में इस ब्राह्मण्डकी उत्पत्ति का इन शब्दों में जिक्र किया है: ।।कीता पसाउ एको कवाउ।।तिसते होए लख दरयाउ।। अर्थात एक जबरदस्त आवाज हुई जिसे ॐ या ऊंकार कहा गया है। और उस आवाज के साथ ही लाखों पानी के दरिया बहने लगे जो कई लाखों वर्षो तक चलते रहे और उसी क्रिया ने इस जलते हुए आग के गोले को धरती के रुप में बदल दिया और इसी तरह धरती पर नदियां और सागर बने जोकि अंतत: जीवन का स्रोत बने। वैज्ञानिकों ने भी कुछ हद तक सृष्टि की संरचना इसी प्रकार से होने की बात कही है। इस धरती की उपजाऊ मिटटी में पैदा होने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पति जिसने धरती पर मनुष्य और अन्य प्राणियों को हजारों सालों तक जीवित रखा। यहां पर कुदरत ने वह सभी पदार्थ उपलब्ध किए हैं जो कि जीवन के लिए आवश्यक है। यहां की जलवायु जिसमें श्वास लेने के लिए आक्सिजन उपलब्ध है। श्वास ही हमारे जीवन का आधार है और हमें कभी इसकी अहमियत का अहसास ही नही होता हम इस पर कभी घ्यान नही देते। जब सिंकदर आधी दुनिया को जीत चुका था तो वह रूस के अत्यन्त ठंडे इलाके में जाकर बीमार हो गया। उसके बहुत सारे सैनिक ठंड की वजह से मर चुके थे उसका साहस जवाब देने लगा था। उसने वापिस अपने वतन लौटने का मन बनाया। वह समुद्र के रास्ते वापिस जा रहा था। उसका जहाज लूटी हुई अपार संपत्ति से भरे पडे थे। उसकी हालत खराब हो रही थी। उसके बहुत भरोसे वाले प्रसिद्ध वैद हकीम उसकी तीमारदारी में लगे थे। वह बार-बार उनसे एक ही प्रश्न पूछता कि क्या मैं जिंदा वापिस पहुंच जाउंगा? मैंने अपनी मां से वादा किया है कि मैं दुनियां जीत कर वापिस तेरे पास आउंगा। कोई दवा उस पर काम नही कर रही थी । वैद हकीमों के सभी नुस्खे उसके लिए बेकार साबित हो रहे थे। जब उसका अंतिम समय नजदीक आया तो उसने अपने हकीमों से कहा कि मैंने जो यह अपार संपत्ति एकत्र की है उसमें से एक हिस्सा मैं तुम्हें दूंगा पर मुझे मेरी मां तक पहुंचा दो। उन्हाने

जवाब दिया कि हम संपत्ति के लालच कि बिना आपको अच्छा करने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। कुछ दिन और बीते उसकी हालत बिगडती जा रही थी। वह विचलित था। उसको इतना विचलित अब तक किसी ने नही देखा था। मौत के भय ने उसे विचलित कर दिया था। अब उसने ईलाज करने वाले हकीमों से कहा कि मैं तुम्हें अपनी आधी संपत्ति दूंगा मुझे एक बार मेरी मां तक पहुंचा दो। उसकी मौत और नजदीक आई। अब वह एक भिखारी की तरह गिड़गिड़ाने लगा। बोला में सारी संपत्ति ले लो मुझे कुछ श्वास दे दो। हकीमों ने कहा मालिक आपकी सारी संपत्ति भी आपको एक श्वास दिलाने में असर्मथ है। वह हताश हो गया। उसने कहा अगर मेरी सारी संपत्ति भी मुझे एक श्वास नही दिला सकती तो इसका क्या अर्थ। उसने अपने साथियों से कहा कि मेरी माँ से मेरी तरफ से माफी मांगना कि मै अपना वादा पूरा नही कर पाया। उसने कह दिया कि जब मेरी अर्थी लेकर जाओ तो मेरे हाथ बाहर रखना ताकि लोग देख सकें कि आधी दुनिया जीतने वाला सिकंदर भी दुनिया से खाली हाथ ही गया। इस धरती पर कब्जा करने को लेकर अब तक न जाने कितने युद्ध हो चुकें हैं और न जाने कितने लोग अपनी जान गंवा चुके है। अब वह इस धरती पर भी नही है और यह धरती वहीं की वहीं है।

हमें इस बात का एहसास ही नही होता कि हम इस अदभुत ब्राह्मण्ड का हिस्सा हैं। हम छोटी-छोटी बातों को लेकर चिंतित होते रहते हैं। या तो हम भूतकाल में हूई गलतियों के बारे में सोचते रहते हैं या भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं। इसी क्रम में हम अपना वर्तमान खो देते हैं। हमें वर्तमान में जीने की कला सीखनी चाहिये ताकि हमारा भविष्य संवर सके। हमारा इस धरती पर होने का कोई बहुत बडा उद्देश्य है जिसे हम न ही जानते है और न ही जानने की उत्सुक्ता रखते हैं। हमें इस बात को जानने की कोशिश करनी चाहिए। यह जरूरी नहीं की हम अपने मकसद में कामयाब हों पर इस से हमारी सोच को एक उड़ान जरूर मिलेगी और उस उड़ान से हमारी सोच में बदलाव आएगा। जैसे हवाई जहाज में बैठकर नीचे देखने पर सभी चीजें छोटी नजर आती हैं वैसे ही अपनी सोच को ऊंचा उठाने पर हमें हमारी समस्याएं छोटी नजर आएंगी। अगर हमें अपनी दुनियां बदलनी है तो हमें अपनी सोच बदलनी होगी। हमने जिस सोच के साथ समस्या खडी की थी हम उसका समाधान उसी सोच के साथ नही कर सकते साधन इंसानों के इस्तेमाल के लिए बनाए गए थे न की साधन इंसान का इस्तेमाल करने के लिए। लेकिन हो इसके विपरीत रहा है। हम साधनों से प्यार करने लगें हैं और इंसानों को इस्तेमाल। हम ताउम्र साधनों को संग्रह करने के लिए संघर्ष करते हैं और उस संघर्ष में हम सब उल्टे सीधे हथकंडों का इस्तेमाल करने से भी नहीं चूकते परन्तु अंत में वह संग्रह किए हुए साधन हमारे किसी काम नहीं आते। हम अपने आप को खाली पाते हैं। इसका तात्पर्य यह कतई नहीं है कि हमें अपने सुख और आराम के साधन नही अर्जित करने चाहिए पर उन्हे अर्जित करने के चक्कर में हमारा वर्तमान व्यर्थ नही जाना चाहिए और हमें अपनी शांती नही खोनी चाहिए। हमें उन साधनों में आसक्ति नही होनी चाहिए। हमारी हालत उस यात्री जैसी है जो निकला तो एक मंजिल के लिए था पर सफर के सुन्दर नज़ारों में ही खो गया और अपनी मंजिल को ही भूल गया।

मोह से मोक्ष!

जितेन्द्र सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

मोह से मोक्ष! यह शीर्षक आपको कुछ अट-पटा सा लग सकता है। क्योंकि हमारे धार्मिक ग्रंथों और धर्म गुरूओं के सतविचारों में 'मोक्ष' के लिए 'मोह' को त्यागने के बारे में जोर दिया जाता रहा है और आज भी हम पढ़ते-सुनते रहते हैं कि 'मोक्ष' अर्थात जन्म और मृत्यू के बंधन से मुक्त होने के लिए हमें 'मोह' का त्याग करना चाहिए।

परन्तु मैं महसूस करता हूँ कि इंसान के पास 'मोह' एक ऐसी महान शक्ति है, जिससे 'मोक्ष' को भी आसानी से हासिल किया जा सकता। मेरे नज़रिए से 'मोह' के दो स्वरूप हैं- एक 'स्वार्थी मोह' और दूसरा 'नि:स्वार्थी मोह'। यह हम पर निर्भर करता है कि हमें 'मोह' का कौन सा स्वरूप चुनना है और किसके प्रति अपना 'मोह' प्रकट करना है। प्रिय मित्रों! यदि हमारे मन में किसी के प्रति मोह न हो - तो शायद मैं, मेरा, मेरे बच्चे, तेरे बच्चे या हमारा..... जैसे शब्द न होते और यदि मैं, आप और हमारा परिवार ही न होते तो शायद यह सुन्दर सी दुनिया भी न होती। जरा सोचिए! बिन बच्चों के हमारा जीवन कैसा होता और बिन हमारे यह दुनिया कैसी होती.....

यह 'मोह' ही तो है जिसके वशीभूत एक स्त्री माँ बनती है, बच्चे को जन्म देती है और बड़े लाड-प्यार से उस बच्चे के प्रति अपनी ममता हर पल प्रकट करती नज़र आती है। प्यारे दोस्तों! यदि 'मोह' न होता तो हम अपनी माँ की ममता को कभी भी महसूस ही न कर पाते। बच्चे से 'मोह' के कारण ही माँ-बाप नि:स्वार्थ भाव से उसके उज्जवल भविष्य के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को हर पल तैयार नज़र आते हैं। इसी प्रकार से नि:स्वार्थ भाव से किए गए 'मोह' से उनकी नैया पार लग सकती है जो 'मोक्ष' का 'मोह' करते रहते हैं अर्थात यदि हम नि:स्वार्थ भाव से 'परमात्मा' से 'मोह' करने की आदत डाल लें तो नि:संदेह हमारी मुक्ति अर्थात मोक्ष के सभी रास्ते बिल्कुल आसान हो जाएंगे क्योंकि 'परमात्मा' को भी तो 'आत्मा' का ही 'मोह' होता है।